घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com **अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 295- गुरूवार 27- अगस्त 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये** RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

नेपाल में बाढ़ से तबाही...

100 से ज्यादा मौतें | **1000** से ज्यादा लापता | **133** भारतीय लापता

पावर प्लांट पुल बहे

नेपाल बाढ़ में 133 भारतीय टूरिस्ट लापता,कैलाश यात्रा पर थे ज्यादातर लोग

काठमांड,26 अगस्त 2026। नेपाल-तिब्बत बॉर्डर पर बुधवार सुबह अचानक आई बाढ़ ने नेपाल के रसुवा जिले में भारी तबाही मचा दी। सुबह 9 बजे तिब्बत की दिशा से भोटेकोशी नदी में अचानक पानी का तेज बहाव आया जिसमें कई इलाके चपेट में आ गए। नेपाल पुलिस के मुताबिक, अब तक 100 से ज्यादा लोगों की मौत की खबर है। नेपाल के पर्यटन विभाग के मुताबिक 1000 से ज्यादा लोगों का पता नहीं चल रहा है। इनमें 133 भारतीय समेत 300 से ज्यादा विदेशी पर्यटक हैं। नेपाली अधिकारियों के मुताबिक एक बार फिर बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। एक अधिकारी ने बताया कि जिस ग्लेशियल झील के फटने से अचानक बाढ़ आई थी, वहां अभी भी करीब 7 मीटर ऊंचा पानी का बांध बना हुआ है। यह कभी भी टूट सकता है। शुरुआती वैज्ञानिक आकलन के मुताबिक, ल्हेंदे नदी में बर्फ और पत्थरों का बड़ा हिस्सा गिरा, जिससे नदी का रास्ता रुक गया और पानी जमा होने लगा। बाद में यह रुकावट टूट गई और जमा पानी तेज रफ्तार से नीचे बहा, जिससे अचानक फ्लैश फ्लड आ गई। ग्लेशियल झील फटने की संभावना की भी जांच की जा रही है। उस समय रसुवा में तेज बारिश नहीं हुई थी। हालांकि इसकी वजह भूकंप भी बताई जा रही है। सुबह 8:37 बजे 4.4 तीव्रता का भूकंप आया था। बाढ़ भी इसी समय के आसपास आई, इसलिए इसके संबंध की जांच हो रही है।

नेपाल में 42 किमी की सड़क बही

बाढ़ का असर रसुवा से नुवाकोट, धादिंग होते हुए चितवन तक देखा गया। रसुवा में टिमुरे, स्याफ्रुबेसी, हाकुबेसी, मेलुंग, सल्लेटार, शांतिबाजार, पैरेबेसी, खाल्टी बस्ती और बेत्रावती समेत करीब एक दर्जन बस्तियां प्रभावित हुईं। बाढ़ धादिंग के गल्छी तक पहुंची और आगे मुग्लिन की ओर बढ़ने की चेतावनी दी गई। बेत्रावती से रसुवागढ़ी-तिब्बत सीमा तक करीब 42 किमी सड़क पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुई। इसके अलावा स्याफ्रुबेसी से सीमा तक 16 किमी सड़क को भी नुकसान पहुंचा।

भारत में कहां-कितना असर होगा

भारत में इसका असर मुख्य रूप से बिहार की गंडक नदी और उससे जुड़ी छोटी-बड़ी नदियों में दिखने की आशंका है। नेपाल से करीब 3 मीटर ऊंची फ्लड वेव आने का अलर्ट है। पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण,गोपालगंज,सारण,मुजफ्फरपुर और वैशाली में खास सतर्कता बरती जा रही है। सीतामढ़ी और शिवहर पर भी नजर है। नेपाल का पानी त्रिशूली नदी से होते हुए गंडक तक पहुंचेगा। इसके बाद बिहार के निचले इलाकों में पानी बढ़ सकता है। अगले 5-6 घंटे अहम बताए गए हैं। हालांकि,अभी यह तय नहीं है कि इन सभी इलाकों में बाढ़ आएगी ही।

नेपाल बाढ़ त्रासदी पर मल्लिकार्जुन खड़गे ने जताया दुख

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने नेपाल में आई विनाशकारी बाढ़ (फ्लैश फ्लड) पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना जताई है। उन्होंने नेपाल के लोगों के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए केंद्र सरकार से लापता भारतीयों का जल्द पता लगाने और उनके परिवारों को हर संभव सहायता उपलब्ध कराने की मांग की। मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा कि नेपाल में आई भीषण बाढ़ से वह गहरे दुखी हैं। उन्होंने कहा कि इस आपदा में जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खोया है, उनके प्रति उनकी हार्दिक संवेदनाएं हैं और भारत इस मुश्किल घड़ी में नेपाल के लोगों के साथ खड़ा है।

प्रधानमंत्री मोदी की पीएम बालेंद्र से बात मुश्किल घड़ी में हरसभंव मदद का भरोसा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल के पीएम बालेंद्र शाह से बात कर फ्लैश फ्लड से मची तबाही पर दुख जताया है। उन्होंने इस विपत्ति में पड़ोसी राष्ट्र की हरसंभव मदद का भरोसा दिया है। प्रधानमंत्री मोदी ने आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पोस्ट के जरिए इसकी जानकारी दी। पीएम ने कहा...'प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह से बात की और नेपाल में बाढ़ से हुई जान-माल की हानि पर संवेदना व्यक्त की। इस मुश्किल समय में भारत के लोग नेपाल में अपने भाई-बहनों के साथ खड़े हैं। भारत नेपाल को हर संभव मानवीय सहायता देने के लिए तैयार है। हमारी टीमें बचाव और राहत कार्यों के लिए मिलकर काम कर रही हैं।

बिहार में बाढ़ का अलर्ट, गंडक नदी के जलस्तर पर नजर

नेपाल में बाढ़ के बीच भारत के पड़ोसी राज्य बिहार में भी गंडक नदी से बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। अधिकारियों ने लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। बिहार के मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने बताया कि राज्य के कई जिलों में तटबंधों की निगरानी, रात में गश्त और आपातकालीन टीमों की तैनाती जैसे कदम उठाए गए हैं। रेड क्रॉस के मुताबिक, करीब 3 मीटर ऊंची लहरों का खतरा जताया गया है।

तिब्बत में भूस्खलन से 3 की मौत, 265 लापता

तिब्बत के ग्यिरोंग में हुए भूस्खलन में अब तक 3 लोगों की मौत हो गई है, जबकि 265 लोग लापता हैं। स्थानीय समयानुसार रात 8 बजे तक का यह आंकड़ा है। प्रभावित इलाके में बचाव अभियान जारी है। नेपाल के रासुवा जिले में आई भीषण बाढ़ के बाद 13 साल की बच्ची समेत 12 ब्रिटिश नागरिक लापता बताए जा रहे हैं। लापता ब्रिटिश नागरिकों की उम्र 13 से 65 साल के बीच है। वे नेपाल-तिब्बत सीमा के पास एक टूर ग्रुप के साथ यात्रा कर रहे थे।

कृति सेनन के कपड़ों पर विवाद कंपनी ने हटाया रक्षाबंधन विज्ञापन

नई दिल्ली,26 अगस्त 2026। ज्वैलरी ब्रांड जीवा ने बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन से जुड़े अपने रक्षाबंधन विज्ञापन को सभी मीडिया प्लेटफॉर्म से हटा दिया है। विज्ञापन में कृति सेनन के पहनावे को लेकर सोशल मीडिया पर विवाद शुरू हुआ था। कुछ यूजर्स ने उनके कपड़ों को लेकर आपत्ति जताते हुए अभिनेत्री को ट्रोल किया। विवाद बढ़ने के बाद कंपनी ने बुधवार,26 अगस्त को आधिकारिक बयान जारी किया और विज्ञापन हटाने की जानकारी दी। हालांकि, कंपनी ने अपने बयान में कृति के पहनावे या सोशल मीडिया पर हुई आलोचना का सीधे तौर पर कोई उल्लेख नहीं किया। जीवा ने अपने बयान में कहा कि कंपनी भारतीय संस्कृति, परंपराओं और त्योहारों का सम्मान करती है। ब्रांड के मुताबिक,उसका उद्देश्य हमेशा परिवार के साथ खुशी और उत्सव के पलों को साझा करना रहा है। कंपनी ने कहा कि त्योहारों को लेकर उसकी सोच सकारात्मक और परिवार-केंद्रित रही है तथा किसी भी समुदाय या वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंचाना उसका उद्देश्य नहीं है। कंपनी ने अपने बयान में बताया कि इस बार उसने पालतू जानवरों को भी परिवार के साथ प्यार और उत्सव का हिस्सा बनाने की कोशिश की थी।

गोवा कैबिनेट ने दी सख्त कानून को मंजूरी....गैरकानूनी धर्मांतरण पर उम्रकैद

गोवा,26 अगस्त 2026। गोवा सरकार ने जबरन या गैरकानूनी तरीके से कराए जाने वाले धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। कैबिनेट बैठक में 'गैरकानूनी धर्म परिवर्तन निषेध विधेयक, 2026' को विधानसभा में पेश करने की मंजूरी दे दी गई। प्रस्तावित कानून में जबरदस्ती, दबाव, धोखाधड़ी,लालच या शादी के माध्यम से कराए जाने वाले कथित धर्म परिवर्तन के खिलाफ कड़े प्रावधान किए गए हैं। सरकार के अनुसार,कानून का उद्देश्य ऐसे लोगों की सुरक्षा करना है,जिन्हें किसी तरह के दबाव या अनुचित तरीके से धर्म बदलने के लिए मजबूर किया जाता है। प्रस्तावित विधेयक में गैरकानूनी धर्म परिवर्तन के मामलों में दोषी पाए जाने वाले लोगों के लिए जेल और जुर्माने का प्रावधान किया गया है। सामान्य मामलों में दोषी को कम से कम तीन साल और

अधिकतम 10 साल तक की सजा हो सकती है। इसके साथ ही कम से कम 50 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया जा सकता है। कानून का उद्देश्य धर्म परिवर्तन की प्रक्रिया में जबरदस्ती, धोखे या अनुचित प्रभाव के इस्तेमाल पर रोक लगाना है। विधेयक में केवल आरोपी को दंडित करने की व्यवस्था ही नहीं, बल्कि पीड़ित को आर्थिक राहत देने का भी प्रावधान प्रस्तावित है। गैरकानूनी धर्म परिवर्तन से प्रभावित व्यक्ति को परिस्थितियों के आधार पर पांच लाख रुपये तक का मुआवजा दिए जाने की व्यवस्था हो सकती है। सरकार का मानना है कि ऐसे मामलों में पीड़ितों के हितों की रक्षा और उन्हें सहायता उपलब्ध कराना भी कानून का महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। यदि कथित गैरकानूनी धर्म परिवर्तन का शिकार कोई नाबालिग,मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति,महिला या अनुसूचित जनजाति वर्ग का सदस्य है,तो प्रस्तावित कानून में अधिक कठोर सजा का प्रावधान किया गया है। ऐसे मामलों में दोषी को पांच से 14 साल तक की जेल हो सकती है और एक लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इन प्रावधानों का उद्देश्य कमजोर या संवेदनशील वर्गों को दबाव और शोषण से अतिरिक्त सुरक्षा देना बताया गया है।

रक्षाबंधन पर लगेगा साल का आखिरी चंद्र ग्रहण,क्या भारत में मान्य होगा सूतक काल?

नई दिल्ली,26 अगस्त 2026। साल का दूसरा और आखिरी चंद्र ग्रहण 28 अगस्त को सावन पूर्णिमा यानी रक्षाबंधन के दिन लगने जा रहा है। पंडित स्वाति अहलूवालिया के अनुसार,यह एक आंशिक चंद्र ग्रहण होगा,जो भारत में दिखाई नहीं देगा। दक्षिण-एशियाईऔर प्रवासी भारतीय समयानुसार ग्रहण की शुरुआत सुबह 6 बजकर 55 मिनट से होगी और यह कुल 5 घंटे 39 मिनट तक चलेगा। चूंकि यह ग्रहण भारत में अदृश्य रहेगा, इसलिए यहां सूतक काल मान्य नहीं होगा और रक्षाबंधन का त्योहार सामान्य रूप से मनाया जाएगा। यह आंशिक चंद्र ग्रहण भारतीय समय के अनुसार सुबह करीब 8 बजकर 04 मिनट पर अपने आंशिक चरण में प्रवेश करेगा। ग्रहण का पीक टाइम सुबह 9 बजकर 43 मिनट पर होगा,जबकि इसका आंशिक चरण सुबह 11 बजकर 21 मिनट पर समाप्त हो जाएगा। यह खगोलीय घटना भारत में नहीं दिखेगी। चंद्रमा पर पृथ्वी की छाया का यह नजारा अमेरिका,यूरोप,अफ्रीका और पश्चिमी एशिया के कुछ हिस्सों में देखा जा सकेगा। जिस समय दुनिया के इन हिस्सों में लोग आसमान में ग्रहण देख रहे होंगे,उसी समय भारत में रक्षाबंधन का पर्व पूरे उत्साह के साथ मनाया जा रहा होगा।

संपादकीय

पोस्टर में कमजोर विद्यार्थी, असली परीक्षा में सरकार

छत्तीसगढ़ की राजनीति में पोस्टर वार ने फिर गर्माया माहौल;व्यंग्य के पीछे उठे सवालों का जवाब नारों से नहीं,काम से देना होगा छत्तीसगढ़ की राजनीति में इन दिनों पोस्टर केवल दीवारों पर चिपके कागज नहीं रह गए हैं। वे सत्ता और विपक्ष के बीच चल रहे राजनीतिक संवाद,आरोप-प्रत्यारोप और जनता के बीच अपनी-अपनी कहानी स्थापित करने का माध्यम बन चुके हैं। कांग्रेस की ओर से जारी किया गया हालिया व्यंग्यात्मक पोस्टर इसी राजनीतिक शैली का एक नया उदाहरण है,जिसमें भाजपा सरकार और उसके संगठन के बीच कथित तालमेल की कमी को लेकर तीखा कटाक्ष किया गया है। पोस्टर में संगठन के शीर्ष पदाधिकारी द्वारा मंत्रियों और नेताओं की 'क्लास'लगाए जाने का चित्रण करते हुए सरकार के मंत्रियों को 'कमजोर विद्यार्थी'बताया गया है। सतह पर यह महज राजनीतिक व्यंग्य दिखाई देता है,लेकिन इसके भीतर विपक्ष का एक स्पष्ट संदेश छिपा है...सरकार के भीतर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा और संगठन को स्वयं मंत्रियों की कार्यशैली पर निगरानी रखनी पड़ रही है। अब यह आरोप कितना सच है और कितना राजनीतिक कल्पना का हिस्सा,इसका फैसला पोस्टर नहीं कर सकता। लेकिन राजनीति में पोस्टर की असली ताकत इसी बात में होती है कि वह जटिल राजनीतिक संदेश को कुछ शब्दों और एक तस्वीर में जनता तक पहुंचा देता है।

कांग्रेस ने इस पोस्टर में खराब सड़कों,धान के भंडारण,नकली दवाइयों और कथित कमीशनखोरी जैसे मुद्दों को भी शामिल किया है। यही वह हिस्सा है जिसे केवल राजनीतिक मजाक कहकर नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। विपक्ष का काम ही सरकार से सवाल पूछना है। यदि सड़कें खराब हैं तो सरकार को जवाब देना होगा,यदि धान के भंडारण में समस्या है तो जिम्मेदारी तय करनी होगी,यदि नकली दवाइयों का कारोबार सामने आ रहा है तो कार्रवाई दिखनी चाहिए और यदि कमीशनखोरी के आरोप लग रहे हैं तो जांच के जरिए सच सामने आना चाहिए। लेकिन यहां विपक्ष के सामने भी उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी है। आरोप लगाना आसान है,प्रमाण के साथ सवाल उठाना कठिन। पोस्टर बनाना आसान है,जनता के मुद्दे को लगातार सदन,सड़क और प्रशासनिक मंच तक ले जाना कठिन। इसलिए यदि विपक्ष वास्तव में जनहित के मुद्दों को उठा रहा है तो उसे पोस्टर की राजनीति से आगे बढ़कर उन मुद्दों पर ठोस दस्तावेज,आंकड़े और तथ्य जनता के सामने रखने चाहिए। सत्ता पक्ष के लिए भी यह पोस्टर एक राजनीतिक संदेश से अधिक एक अवसर है। यदि सरकार को लगता है कि विपक्ष केवल भ्रम फैला रहा है तो उसका सबसे प्रभावी जवाब पलटवार वाला पोस्टर नहीं, बल्कि जमीन पर दिखाई देने वाला काम होगा। सड़कें सुधर जाएं,धान का भंडारण व्यवस्थित हो जाए,नकली दवाओं पर कठोर कार्रवाई हो और भ्रष्टाचार के मामलों में निष्पक्ष कार्रवाई दिखाई दे तो विपक्ष के पोस्टर अपने आप कमजोर पड़ जाएंगे। राजनीति में सबसे मजबूत जवाब प्रेस विज्ञप्ति नहीं,परिणाम होता है।

यह भी देखना दिलचस्प है कि संगठन और सरकार के संबंधों को लेकर विपक्ष किस तरह की तस्वीर जनता के सामने रखना चाहता है। संगठन का सरकार पर निगरानी रखना अपने आप में असामान्य बात नहीं है। राजनीतिक दलों में संगठन और सरकार की अपनी-अपनी भूमिकाएं होती हैं। संगठन जनता और कार्यकर्ताओं से मिलने वाली प्रतिक्रिया सरकार तक पहुंचाता है और सरकार उस प्रतिक्रिया के आधार पर अपनी कार्यशैली सुधारती है। इसे लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था का हिस्सा भी माना जा सकता है। लेकिन यदि समीक्षा बैठकें सार्वजनिक राजनीतिक तमाशे की तरह प्रस्तुत होने लगें या बार-बार यह संदेश जाए कि संगठन को सरकार के कामकाज पर 'क्लास' लगानी पड़ रही है,तो विपक्ष को राजनीतिक मुद्दा मिलना स्वाभाविक है। सत्ता पक्ष को यह तय करना होगा कि समीक्षा की प्रक्रिया संगठनात्मक मजबूती का संकेत बने या कमजोरी की सार्वजनिक धारणा पैदा करे।

वहीं कांग्रेस को भी यह समझना होगा कि जनता केवल पोस्टर देखकर अपना फैसला नहीं करती। आज का मतदाता पहले की तुलना में अधिक जानकारी रखता है। वह पोस्टर भी देखता है,सरकार का काम भी देखता है और विपक्ष का व्यवहार भी। वह यह भी देखता है कि जो मुद्दे विपक्ष उठा रहा है, उनके समाधान के लिए उसने स्वयं क्या प्रयास किए। पोस्टर वार लोकतंत्र की भाषा का हिस्सा हो सकता है,लेकिन लोकतंत्र को केवल पोस्टर वार तक सीमित कर देना खतरनाक है। राजनीति यदि सिर्फ मीम, पोस्टर, वीडियो और सोशल मीडिया के कटाक्षों तक सिमट गई तो वास्तविक मुद्दे धीरे-धीरे पीछे छूट जाएंगे। जनता को सड़क चाहिए,पोस्टर नहीं;अस्पताल में दवा चाहिए,राजनीतिक आरोप नहीं; किसान को अपनी उपज के भंडारण और भुगतान की चिंता है,उसे राजनीतिक व्यंग्य से राहत नहीं मिलेगी। इसलिए कांग्रेस के पोस्टर में उठाए गए सवालों का जवाब भाजपा को राजनीतिक भाषा में नहीं,प्रशासनिक प्रदर्शन में देना चाहिए। और कांग्रेस को भी यह साबित करना होगा कि वह केवल सत्ता पर तंज कसने के लिए नहीं, बल्कि जनता के मुद्दों को गंभीरता से उठाने के लिए विपक्ष में है।

पोस्टर में चाहे कोई मंत्री 'कमजोर विद्यार्थी' दिखाई दे,असली परीक्षा चुनाव के मैदान में नहीं, रोजमर्रा की जिंदगी में होती है। सड़क पर चलते नागरिक,अस्पताल पहुंचता मरीज,खेत में खड़ा किसान,स्कूल जाता बच्चा और राशन की दुकान पर खड़ा गरीब–यही वे परीक्षक हैं,जिनके हाथ में सरकार की असली मार्कशीट है। इसलिए पोस्टर लगते रहें,व्यंग्य चलते रहें और राजनीतिक वार-पलटवार भी होते रहें–लोकतंत्र में इसकी जगह है। लेकिन अंततः जनता यही पूछेगी कि किसने सवाल ज्यादा अच्छे पूछे और किसने काम ज्यादा अच्छा किया?

क्योंकि सियासत की दीवार पर पोस्टर कुछ दिनों में उतर जाता है,लेकिन सड़क का गड्ढा,किसान की परेशानी और मरीज की तकलीफ लंबे समय तक याद रहती है।

राखी का दिन एक है,मगर रिश्ते की जरूरत हर दिन

राखी : रिश्ते की याद या जिम्मेदारी का धागा
राखी वही रही,मगर 'अपना' होने का अर्थ बदल गया

कृति आरके जैन
बड़वानी,मध्यप्रदेश

राखी को हम भाई-बहन के स्नेह का त्योहार कहते हैं,लेकिन इससे जुड़ी 'रक्षा' की धारणा पर ठहरकर सोचने की जरूरत है। बहन कलाई पर धागा बाँधती है और भाई उसकी रक्षा का वचन देता है। पर जीवन की सच्चाई इससे कहीं व्यापक है। कोई धागा न महँगाई रोक सकता है, न नौकरी की चिंता मिटा सकता है,न कठिन समय में साथ खड़ा हो सकता है। असली सुरक्षा रस्म से नहीं,व्यवहार से मिलती है। फिर भी यह परंपरा हर साल दोहराई जाती है, क्योंकि रिश्तों में कुछ भाव तर्क से नहीं,स्मृतियों और परंपराओं से जीवित रहते हैं। सवाल बस इतना है...आज हमारे जीवन में इस परंपरा का अर्थ कितना बचा है?

समय के साथ राखी भी बदल गई है। कभी सादा सूती धागा ही पर्याप्त था,आज बाजार में चमकदार,क्रिस्टल और रोशनी वाली राखियों से लेकर वर्चुअल राखी तक मौजूद है। बाजार ने भावनाओं को भी सजाकर बेचने का हुनर सीख लिया है। बहन राखी खरीदती है,भाई उपहार देता है और रस्म पूरी हो जाती है। इसमें बुराई नहीं,पर जब महँगी वस्तु प्रेम की कसौटी बन जाए,तब रिश्ते का अर्थ खोने लगता है। आखिर रिश्तों का मोल राखी की कीमत से नहीं,उसमें बँधे अपनत्व से तय होता है। सादा धागा भी उतना ही अनमोल है,यदि उसमें स्नेह जीवित हो।

राखी के साथ जुड़ी'भाई रक्षक,बहन संरक्षित'की धारणा अब उतनी सहज नहीं रही। आज बहनें पढ़ती हैं,नौकरी करती हैं,कारोबार सँभालती हैं और परिवार के बड़े फैसलों में बराबर की भागीदार हैं। कई बार वही भाई की मुश्किल में ढाल बनती हैं...पैसे,सलाह और जिम्मेदारी,हर मोर्चे पर। ऐसे में केवल भाई द्वारा बहन की रक्षा का वचन रिश्ते की पूरी तस्वीर नहीं दिखाता। भाई का साथ जरूरी है, तो बहन का सहारा भी उतना ही मूल्यवान है। दोनों एक-दूसरे की ताकत हैं। राखी का अर्थ भी इसी पारस्परिक सहारे और बराबरी तक पहुँचना शायद समय की सबसे स्वाभाविक पुकार है।

राखी का सार्वजनिक और राजनीतिक इस्तेमाल अब आम हो चुका है। नेता महिलाओं से राखी बँधवाकर सुरक्षा का वादा करते हैं;तस्वीरें खिंचती हैं,खबरें बनती हैं और कुछ समय के लिए गंभीरता का आभास भी होता है। लेकिन महिला की सुरक्षा किसी समारोह की मोहताज नहीं–उसे कानून,व्यवस्था, सम्मान और रोजमर्रा के आचरण का सहारा चाहिए। कलाई पर बँधा धागा तभी अर्थवान है,जब उससे जुड़ा वादा व्यवहार में उतरे। केवल रस्म निभा लेने से जिम्मेदारी पूरी नहीं होती। जब परंपरा

प्रदर्शन बन जाती है,तो उसका भाव गहरा होने के बजाय कई बार खोखला पड़ जाता है। आज की बहन से यह कहना कि उसे हर समय किसी पुरुष की सुरक्षा चाहिए,उसके बदलते जीवन को नकारना है। आत्मनिर्भरता भी सुरक्षा की एक मजबूत जमीन है। इसका अर्थ भाई की जरूरत खत्म होना नहीं,बल्कि रिश्ते को एकतरफा संरक्षण से आगे ले जाना है। भाई बहन के फैसलों का सम्मान करे और बहन भी भाई की मुश्किलों में उसके साथ खड़ी हो...यही रिश्ते की असली बराबरी है। इसलिए जब बहन हँसते हुए कहती है,अब तुम्हारी रक्षा मेरी जिम्मेदारी है, तो इस मजाक में गहरी सच्चाई छिपी है। रिश्ता तभी मजबूत होता है, जब चिंता और सहारा दोनों तरफ से हों। परंपरा का बदलना, उसका मिटना नहीं; उसे समय के साथ नया अर्थ देना है।

दूरियों ने राखी का रूप बदल दिया है। अब राखी डाक से,उपहार ऑनलाइन, पैसे यूपीआई से और त्योहार वीडियो कॉल पर मनाया जाता है। तकनीक ने फासलों के बावजूद रस्म निभाना आसान कर दिया है। अपनापन घटा या बढ़ा, इसका कोई सीधा हिसाब नहीं। स्क्रीन पर हुई बातचीत भी आत्मीय हो सकती है, बशर्ते रिश्ते में गर्माहट हो। मगर कई बार राखी संदेश,लेन-देन और औपचारिकता तक सिमट जाती है। समय की कमी ने रस्मों पर निर्भरता बढ़ाई है,पर याद रहे–रस्म दूरी पाट सकती है,रिश्ता नहीं बना सकती। शायद राखी की सबसे सच्ची तस्वीर उस एक दिन में दिखती है,जब भाई-बहन पुरानी नाराजगियाँ कुछ देर किनारे रख देते हैं। सालभर संपत्ति, जिम्मेदारियों,पैसों और पारिवारिक मतभेदों से मनमुटाव हो सकता है,फिर भी राखी पर वही लोग साथ बैठते हैं, मिठाई बाँटते हैं और पुरानी बातों पर हँस लेते हैं। यह कोई स्थायी समाधान नहीं, लेकिन रिश्ते को टूटने से बचाने वाली एक छोटी कोशिश जरूर है। इसलिए राखी केवल रिश्ते की मजबूती का प्रमाण नहीं,बल्कि यह याद भी है कि संबंधों को समय-समय पर संवाद, स्मृति और क्षमा की जरूरत होती है। कलाई का धागा इसी जरूरत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है। शायद राखी की असली खूबसूरती किसी एक वचन में नहीं, उस एहसास में है कि जीवन चाहे जितनी दूरियाँ और मुश्किलें सामने रखे,भाई-बहन एक-दूसरे के लिए बने रहें। बहन को कमजोर समझकर सुरक्षा देना और भाई को केवल रक्षक मान लेना,इस रिश्ते को छोटा कर देता है। सच्चा रिश्ता वह है जिसमें दोनों अपने फैसलों और जीवन में स्वतंत्र हों, फिर भी एक-दूसरे की जरूरत को बिना कहे समझें और कठिन समय में साथ खड़े हों। यही राखी की डोर का गहरा अर्थ है–कलाई पर बँधा छोटा-सा धागा, जो याद दिलाता है कि रिश्ते सुरक्षा के वादों से नहीं,उस भरोसे से मजबूत होते हैं जो मुश्किल वक्त में हाथ थाम लेता है।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

चीनी की मिठास पर महंगाई की कड़वाहट

डॉ. प्रियंका सौरभ
हिसार,हरियाणा

भारत में त्योहारों का मौसम न केवल साल का एक खास समय होता है,बल्कि जीवन का भी एक अहम हिस्सा होता है। मिठाइयाँ, पारंपरिक भोजन,धार्मिक अनुष्ठान, मेहमाननवाज़ी और उपभोग में बढ़ोतरी। यही कारण है कि चीनी की कीमतों में हाल ही में हुई बढ़ोतरी पर गहराई से नज़र डालना बेहद ज़रूरी है। कुछ शहरों में खुदरा चीनी की कीमतें ₹42-45 से बढ़कर ₹62-65 हो जाना और थोक व मिल से चीनी की कीमतें ऊँची बनी रहना,इसे महज़ एक मौसमी घटना कहना बहुत सरल व्याख्या होगी। यहाँ एक बड़ा नीतिगत मुद्दा है: क्या भारत खाद्य अनाज,कच्चे माल और ऊर्जा नीति के एक हिस्से के रूप में चीनी के बीच सही संतुलन बना पा रहा है?

लागत में वृद्धि कई कारकों के कारण होती है। पहला कारण मौसमी मांग है–यानी गर्मियों में होने वाली अतिरिक्त मांग। त्योहारों के दौरान चीनी की खपत में उल्लेखनीय वृद्धि होती है,जिससे आपूर्ति पर भारी दबाव पड़ता है। वहीं दूसरी ओर,चीनी उत्पादन के मौसम के अंत में चीनी मिलों में स्टॉक कम होने लगता है,जिससे आपूर्ति और मांग का अंतर कम हो जाता है। वैश्विक चीनी कीमतों का भी चीनी की कीमतों और बाजार की भावना पर प्रभाव पड़ सकता है। हालांकि, इस पूरी कहानी का एक महत्वपूर्ण पहलू देश का इथेनॉल अनिवार्य नियम है। भारत में पेट्रोल में इथेनॉल का मिश्रण एक क्रमिक प्रक्रिया रही है,जिसके तीन उद्देश्य हैं:आयातित कच्चे तेल पर निर्भरता कम करना,किसानों को एक और बाजार उपलब्ध कराना और चीनी मिलों को आय का एक और स्रोत प्रदान करना। इसलिए,चीनी की कीमतों में वृद्धि का एकमात्र कारण इथेनॉल को नहीं माना जाना चाहिए। लेकिन घरेलू चीनी की उपलब्धता पर इसके प्रभाव को नजरअंदाज करना भी एक गलती होगी।

अगर उपलब्ध चीनी का इस्तेमाल इथेनॉल उत्पादन के लिए किया जाता है,तो चीनी की कीमतों पर और दबाव पड़ सकता है, जिससे घरेलू चीनी भंडार प्रभावित होंगे। अब सरकार के नीतिगत फैसलों की असली परीक्षा है। खाद्य मुद्रास्फीति का सीधा असर परिवारों पर पड़ेगा,और ऊर्जा सुरक्षा एक दीर्घकालिक लक्ष्य है। इथेनॉल कार्यक्रम को बंद करने की मांग नहीं की जा रही है,बल्कि इसे बाजार की स्थितियों के अनुरूप ढालने के लिए अधिक लचीला बनाने की मांग की जा रही है। घरेलू चीनी भंडार स्थिर होने पर, इथेनॉल उत्पादन के लिए अधिक गुंजाइश रखी जा सकती है। हालांकि, खाद्य आपूर्ति सीमित होने और कीमतें बढ़ने की आशंका को देखते हुए,घरेलू खाद्य उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अल्प कालिक अनुकूलन उपायों के लिए गुंजाइश होनी चाहिए।

सरकार द्वारा 10 लाख टन चीनी के आयात और स्टॉक सीमा जैसे अन्य उपायों की घोषणा से त्योहारी मौसम से पहले बाजार को कुछ समय के लिए राहत मिलेगी और बाजार में स्थिरता आएगी। लेकिन एक सवाल उठता है जिस पर विचार करना जरूरी है : क्या कीमतें बढ़ने के बाद ही हस्तक्षेप करना चाहिए? कृषि उत्पादों से संबंधित नीतियों की प्रभावशीलता का एक संकेतक कमी का पूर्वानुमान लगाने की क्षमता है। यदि सरकार के पास उत्पादन,घरेलू खपत और इथेनॉल की ओर संभावित बदलाव का विश्वसनीय अनुमान हो, तो संभावित स्टॉक की कमी का आसानी से पता लगाया जा सकता है। इसलिए चीनी आयात को केवल एक प्रतिक्रिया के रूप में नहीं,बल्कि एक नीतिगत दृष्टिकोण के रूप में देखा जाना चाहिए,जो पूर्वानुमानित और समयबद्ध हो। अनावश्यक आयात किसानों और मिलों के लिए हानिकारक हो सकता है और उत्पाद की कमी होने पर इससे बचना चाहिए; हालांकि,आवश्यकता पड़ने पर आयात न करने से उपभोक्ता को अधिक कीमतों का सामना करना पड़ सकता है।

पारदर्शिता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कमोडिटी बाजार केवल बाजार में उपलब्ध वस्तुओं तक ही सीमित नहीं है;यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि बाजार में उनकी छवि कैसी है। देश के भंडार की स्थिति जाने बिना,व्यापारी और उपभोक्ता अटकलों,अफवाहों और अपेक्षाओं से प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए,सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इथेनॉल के उत्पादन,भंडार,खपत और डायवर्जन से संबंधित अधिक विश्वसनीय और नियमित जानकारी उपलब्ध हो। अधिक जानकारी से जमाखोरी और कृत्रिम कमी का पता लगाने में मदद मिलेगी और नीति निर्माताओं को किसी भी वास्तविक कमी के बारे में प्रारंभिक चेतावनी मिल सकेगी। कुछ मामलों में,स्टॉक सीमा आवश्यक हो सकती है, लेकिन केवल स्टॉक सीमा ही बाजार की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

चीनी की बढ़ती कीमतों का एक और पहलू सामाजिक प्रभाव है। खाद्य मुद्रास्फीति का असर अक्सर सभी पर समान रूप से नहीं पड़ता। प्रति किलोग्राम कुछ रुपये की अतिरिक्त कीमत भी निम्न और मध्यम आय वर्ग के परिवारों के बजट पर भारी पड़ सकती है, जबकि उच्च आय वर्ग के परिवार शायद इसे वहन कर सकें। यह त्योहारों के मौसम की बात है,जब भोजन और मिठाइयों पर खर्च का दबाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। छोटे मिठाई की दुकानों,बेकरियों और स्थानीय खाद्य व्यवसायों के लिए एक और चुनौती है। बड़ी कंपनियों के विपरीत,उनके पास कच्चे माल की लगातार बढ़ती लागत को वहन करने के लिए पर्याप्त क्षमता नहीं होती है। उन्हें एक कठिन दुविधा का सामना करना पड़ता है,क्योंकि उन्हें या तो अपने मुनाफे में कटौती करनी होगी या चीनी,दूध,घी आदि और सूखे मेवों की कीमतें बढ़ानी होंगी। अंततः,इसका बोझ उपभोक्ता पर ही पड़ता है।

नीतिगत चर्चाओं में,उपभोक्ताओं और किसानों के हितों को इस तरह से पेश किया जाता है मानो वे अनिवार्य रूप से परस्पर विरोधी हों। यह एकमात्र समाधान नहीं है। किसानों को गन्ने से उचित आय चाहिए,मिलों को वित्तीय स्थिरता चाहिए,सरकार इथेनॉल के रूप में गन्ने का उत्पादन बढ़ाने में रुचि रखती है और उपभोक्ताओं को चीनी का उचित मूल्य चाहिए। एक टिकाऊ नीति एकतरफा नहीं हो सकती और एक समूह को नुकसान पहुंचाकर दूसरे को लाभ नहीं पहुंचा सकती।

त्योहारी मौसम में चीनी की कीमतों में वृद्धि होना कोई असामान्य बात नहीं है। मांग अधिक होने पर बाजार पर दबाव पड़ना स्वाभाविक है। हालांकि, अगर छुट्टियों के अंत तक कीमतें कम नहीं होती हैं,तो यह कहना मुश्किल होगा कि पूरी वृद्धि मौसमी मांग के कारण हुई है। सरकार को उत्पादन अनुमानों की सटीकता, स्टॉक स्तरों की सटीकता,इथेनॉल के उपयोग के लिए निर्धारित चीनी की मात्रा और आयात सही समय पर किए गए थे या नहीं,इन सभी की समीक्षा करनी होगी।

चीनी की कीमतों में मौजूदा वृद्धि महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत की आर्थिक नीति के विभिन्न प्रमुख नीतिगत लक्ष्यों के बीच विरोधाभास को उजागर करती है। ये लक्ष्य सराहनीय हैं, जिनमें किसानों की आय में वृद्धि,ऊर्जा सुरक्षा में सुधार और उपभोक्ता मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाना शामिल है।

त्योहारी मौसम की मिठास को बनाए रखने के लिए बाज़ार में चीनी की मात्रा बढ़ाना ही काफी नहीं है। भारत को एक ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता है जिसमें चीनी की कीमतों में अचानक वृद्धि को नीति निर्माण में देरी या बाज़ार संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने में विफलता का लक्षण न माना जाए। चीनी की कीमतों पर बहस केवल इस बात तक सीमित नहीं है कि उपभोक्ता एक किलो चीनी के लिए कितना भुगतान करता है। यह भारत की खाद्य सुरक्षा, किसानों के हितों और ऊर्जा परिवर्तन के कुशल प्रबंधन से संबंधित है। यही वास्तविक नीति का परीक्षण करने का एकमात्र तरीका है।

प्रकाशक: दैनिक घटती-घटना

श्रम और कौशल विहीन शिक्षा पद्धति तकनीकी शिक्षा का अभाव

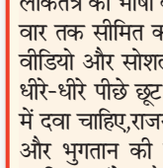

संजीव ठाकुर
रायपुर,छत्तीसगढ़

शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर सोचने,करने और समाज के लिए उपयोगी बनने की क्षमता पैदा करना है। महात्मा गांधी की नई तालीम का मूल विचार इसी दिशा में था कि शिक्षा जीवन और श्रम से जुड़ी हो। आज जब भारत दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देशों में है, तब यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारी शिक्षा युवाओं को केवल डिग्री दे रही है या उनके हाथों में ऐसा कौशल भी दे रही है जिससे वे सम्मानजनक रोजगार प्राप्त कर सकें और स्वयं रोजगार पैदा कर सकें।भारत में शिक्षा का विस्तार निस्संदेह हुआ है। गांव-गांव विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय पहुंचे हैं। उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ी है। लेकिन इसके साथ एक गंभीर समस्या भी सामने आई है डिग्री और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी। बड़ी संख्या में युवा स्नातक और स्नातकोत्तर होने के बाद भी रोजगार के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की लंबी कतार में खड़े दिखाई देते हैं। शिक्षा पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश स्वयं एक पूर्णकालिक काम बन जाती है।

यह कहना उचित नहीं होगा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था केवल बेरोजगार पैदा करती है,क्योंकि शिक्षा ने देश को वैज्ञानिक,चिकित्सक, अभियंता,शिक्षक,प्रशासक,उद्यमी और असंख्य विशेषज्ञ भी दिए हैं। समस्या अधिक गहरी है। शिक्षा का बड़ा हिस्सा अभी भी ज्ञान,परीक्षा और प्रमाणपत्र के इर्द-गिर्द घूमता है,जबकि आधुनिक अर्थव्यवस्था को ज्ञान के साथ कौशल, तकनीक,अनुभव और समस्या-समाधान की क्षमता चाहिए।

डिग्री बनाम दक्षता

आज किसी युवक के पास बीए, बीकॉम, बीएससी या एमए की डिग्री हो सकती है,लेकिन यदि उसके पास कंप्यूटर,डिजिटल तकनीक, मशीन संचालन,इलेक्ट्रॉनिक्स,कृषि-तकनीक, लेखांकन,डिजाइन,डेटा विश्लेषण, स्वास्थ्य सेवा,निर्माण,मरम्मत,संचार अथवा किसी अन्य रोजगारपरक क्षेत्र की व्यावहारिक दक्षता नहीं है तो उसकी डिग्री रोजगार की गारंटी नहीं देती। यही वह बिंदु है जहां शिक्षा व्यवस्था को अपने पुराने ढांचे पर पुनर्विचार करना होगा।

डिग्री शिक्षा का अंत नहीं,रोजगार और जीवन की क्षमता का आरंभ होनी चाहिए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसी समस्या को पहचानते हुए व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा में लाने,विद्यालय स्तर से कौशल शिक्षा देने और उद्योग के साथ शिक्षा संस्थानों के संबंध मजबूत करने की दिशा निर्धारित की है। नीति में 2025 तक कम-से-कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव देने का लक्ष्य रखा गया था।

आवश्यकता अब लक्ष्य निर्धारित करने से आगे बढ़कर उसकी प्रभावी जमीन तैयार करने की है।

महात्मा गांधी की नई तालीम से सीख

महात्मा गांधी शिक्षा को हाथ,दिमाग और हृदय तीनों के विकास से जोड़ते थे। उनकी बुनियादी शिक्षा में उत्पादनकारी कार्य और शिक्षा का संबंध महत्वपूर्ण था। इसका अर्थ यह था कि विद्यार्थी केवल किताब से नहीं,काम करते हुए भी सीखता है।

आज इस विचार को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ने की आवश्यकता है

कक्षा छह या आठ से ही विद्यार्थियों को स्थानीय अर्थव्यवस्था और भविष्य के रोजगार से परिचित कराया जा सकता है। कोई बच्चा कृषि-तकनीक सीखे,कोई सौर ऊर्जा,कोई इलेक्ट्रॉनिक्स,कोई ड्रोन संचालन,कोई कंप्यूटर प्रोग्रामिंग,कोई बढ़ईगीरी,कोई खाद्य प्रसंस्करण, कोई स्वास्थ्य-सहायता,कोई डिजिटल डिजाइन और कोई स्थानीय हस्तशिल्प।

इससे काम करने और छोटा-बड़ा काम जैसी सामाजिक धारणाओं को भी बदलना होगा। श्रम की प्रतिष्ठा शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बननी चाहिए।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन और शिक्षा का व्यापक उद्देश्य

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षा को केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं मानते थे। उनके लिए शिक्षा व्यक्ति के बौद्धिक और नैतिक विकास का माध्यम थी। इसलिए रोजगारपरक शिक्षा का अर्थ केवल मशीन चलाना या कंप्यूटर सीखना नहीं होना चाहिए। युवा को तकनीकी कौशल के साथ चरित्र, अनुशासन, संवेदना, संवाद-कौशल, नागरिक चेतना और नैतिकता भी चाहिए।

हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो कहे...

कमाओ भी,सोचो भी; बनाओ भी,समाज को समझो भी।

पेपर लीक : व्यवस्था के विश्वास पर चोट प्रतियोगी परीक्षाओं का संकट इस समस्या को और गंभीर बनाता है। जब लाखों युवा वर्षों तक एक परीक्षा की तैयारी करते हैं और फिर प्रश्नपत्र लीक,नकल या अन्य अनियमितताओं के कारण परीक्षा प्रभावित होती है, तो नुकसान केवल एक परीक्षा का नहीं होता–युवा का समय,पैसा, मानसिक ऊर्जा और व्यवस्था पर विश्वास भी प्रभावित होता है।

अगस्त 2026 में बिहार में भर्ती परीक्षा में कथित प्रश्नपत्र लीक और अनियमितताओं को लेकर छात्रों का विरोध फिर सामने आया। इसी वर्ष संसद में सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों को रोकने से संबंधित संशोधन विधेयक भी पारित हुआ,जिसका उद्देश्य परीक्षा प्रणाली को अधिक पारदर्शी और सुरक्षित बनाना है।

इसलिए परीक्षा सुधार केवल कड़ी सजा का विषय नहीं है। परीक्षा-प्रणाली में तकनीकी सुरक्षा,विकेंद्रीकृत प्रश्नपत्र निर्माण,एन्क्रिप्टेड डिजिटल वितरण,सुरक्षित प्रिंटिंग,सीसीटीवी, डिजिटल ऑडिट और जवाबदेही की पूरी श्रृंखला आवश्यक है।लेकिन उससे भी बड़ी जरूरत यह है कि सरकारी नौकरी को ही सफलता का एकमात्र पर्याय न बनाया जाए।

जर्मनी से सीख : पढ़ाई के साथ काम

जर्मनी की वोकेशनल एजुकेशन एंड प्लैनिंग प्रणाली भारत के लिए उपयोगी उदाहरण हो सकती है। वहां विद्यार्थी व्यावसायिक विद्यालय में सैद्धांतिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ कंपनियों में व्यावहारिक प्रशिक्षण लेते है जर्मनी में ऊपरी माध्यमिक स्तर के लगभग एक-तिहाई विद्यार्थी व्यावसायिक कार्यक्रमों में होते हैं और अधिकांश अप्रेंटिसशिप आधारित व्यवस्था में प्रवेश करते हैं।यह व्यवस्था इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यार्थी केवल नौकरी के लिए तैयार नहीं होता, वह नौकरी के वास्तविक वातावरण में प्रशिक्षण प्राप्त करता है। कंपनियां भी प्रशिक्षण प्रक्रिया में भाग लेती हैं और प्रशिक्षुओं को भत्ता देती हैं। भारत में भी विद्यालय,आईटीआई,पॉलिटेक्निक, विश्वविद्यालय और उद्योग के बीच ऐसा मजबूत नेटवर्क बनाया जा सकता है।

फिनलैंड से सीख : लचीली और मॉड्यूलर शिक्षा

फिनलैंड में व्यावसायिक शिक्षा को बदलती अर्थव्यवस्था के अनुरूप लगातार संशोधित किया जाता है। वहां व्यावसायिक योग्यता कई मॉड्यूल में विभाजित हो सकती है और विद्यार्थियों के लिए छोट माइक्रो क्वालिफिकेशन भी विकसित किए जा रहे हैं, ताकि वे विशिष्ट कार्यों के लिए जल्दी आवश्यक कौशल हासिल कर सकें। भारत जैसे विशाल देश के लिए यह मॉडल अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

हर विद्यार्थी को तीन या चार वर्ष की डिग्री का इंतजार क्यों करना पड़े? यदि कोई युवा छह महीने में सौर पैनल इंस्टॉलेशन,ड्रोन संचालन,मोबाइल रिपेयर,कंप्यूटर नेटवर्किंग, डिजिटल अकाउंटिंग या किसी विशेष मशीन का संचालन सीख सकता है। छोटी अवधि का कौशल, तत्काल काम और आगे उच्च शिक्षा का रास्ता–यही भविष्य की शिक्षा का महत्वपूर्ण मॉडल हो सकता है।

राखी का त्योहार

मोनिका डागा आनंद,
चेन्नई,
तमिलनाडु

भाई को कुंकुम तिलक लगा,करें बहन मनुहार,
प्रेम डोर से सजी कलाई,राखी का त्योहार ।
संजोए प्यारी सी स्मृतियॉं,बूँदों की बौछार,
बचपन की ये प्रीत निराली,खुशियों की झंकार ।
रिश्तों का रंगीला सावन,त्यौहारों की धूम,
राखी लाई ढेरों खुशियॉं,झूला झूलें झूम ।
भाई और बहन का रिश्ता,बंधन है मासूम,
बहन प्यार से भाई का झट,लेती माथा चूम ।
भाई धीरे से फिर देता,सुंदर सा उपहार,
बहना तू है मेरे दिल का,चमकीला सा हार ।
तू जो करती चिंता मेरी,बढ़-चढ़कर हरबार,
कितना चाहें तुझे सताऊँ,करता तुझसे प्यार ।
रहें सदा खुश मेरी बहना,रखना है ये ध्यान,
बड़े प्रेम से अमिय भाव का,भाई रखता मान ।
बहना भी कर जोड़ ईश से,मॉंगें ये वरदान,
खुशहाल रहें भाई मेरा,गाऊँ मंगलगान ।
एक दूसरे का मन से दें,पूरा-पूरा साथ,
भाई और बहन थामें है,बचपन से ये हाथ ।
उपजे आनंदअनंत सदा,परम्परा की रीत,
परिवार में हँसी-खुशी बसें,सजें सुनहली प्रीत ।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

सम्पादक

जश्ने ईद मिलादुन्नबी में गूंजा भाईचारे और इंसानियत का संदेश

शहर के विभिन्न मोहल्लों से निकला जुलूस कला केंद्र मैदान पहुंचा, सर्वधर्म गुरुओं ने पैगंबर मोहम्मद साहब के जीवन और आदर्शों पर रखे विचार

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

पैगंबर हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जन्मदिन के अवसर पर बुधवार को अंबिकापुर में जश्ने ईद मिलादुन्नबी पूरी शिद्दत,श्रद्धा,शालीनता और उत्साह के साथ मनाया गया। शहर के विभिन्न मोहल्लों से निकला जुलूस मुख्य मार्गों से होते हुए कला केंद्र मैदान पहुंचा,जहां सीरतुन्नबी कमेटी अंबिकापुर की ओर से भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की खासियत यह रही कि इसमें मुस्लिम समाज के साथ शहर के विभिन्न धर्मों एवं समुदायों के धर्मगुरु,जनप्रतिनिधि और प्रबुद्ध नागरिक शामिल हुए। मंच से सर्वधर्म समभाव और आपसी भाईचारे का संदेश दिया गया।

सर्वधर्म गुरुओं ने बताया मोहम्मद साहब का जीवन-दर्शन

कार्यक्रम को ईसाई समाज के धर्मगुरु बिशप स्वामी डॉ. एंथोनी बड़ा,सिख समाज के वक्ता हर्षदीप सिंह जिंदल, हिंदू समाज के वक्ता अंजनी कुमार पांडेय तथा मुस्लिम समाज के धर्मगुरु मौलाना सगीर मिस्बाही एवं मौलाना हमीद रजा ने संबोधित किया। वक्ताओं ने पैगंबर मोहम्मद साहब के जीवन, उनके आदर्शों और मानवता के प्रति उनके संदेश पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनका संदेश प्रेम,करुणा, न्याय,भाईचारे,अनुशासन,ईमानदारी और जरूरतमंदों की मदद की प्रेरणा देता है। वक्ताओं ने सभी धर्मों के सम्मान,सामाजिक सौहार्द और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि समाज में जब भी नफरत और विभाजन की परिस्थितियां पैदा हों,तब इंसानियत और भाईचारे को प्राथमिकता देना ही सच्चा रास्ता है। वक्ताओं ने देशप्रेम और सामाजिक जिम्मेदारी पर भी जोर देते हुए लोगों से जिस समाज और देश में रहते हैं, उसके प्रति ईमानदारी से अपना दायित्व निभाने का आह्वान किया।

सिंहदेव बोले...सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल है आयोजन

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत सरगुजा के पूर्व उपाध्यक्ष आदित्येश्वर शरण सिंहदेव ने कहा कि सीरतुन्नबी कमेटी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला यह कार्यक्रम अंबिकापुर की गंगा-जमुनी तहजीब और सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल है। विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोगों को एक मंच पर लाकर आपसी भाईचारे एवं सामाजिक समरसता को मजबूत करने की पहल सराहनीय है।

मेधावी विद्यार्थियों और खिलाड़ियों का सम्मान : समारोह में शिक्षा, खेल, प्रतियोगी परीक्षाओं और समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कक्षा 10वीं एवं 12वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। वहीं बॉक्सिंग,हैंडबॉल, शूटिंग, कुश्ती और कैरम सहित विभिन्न खेलों में जिला एवं राज्य स्तर पर अंबिकापुर का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों का भी सम्मान हुआ। पीएससी एवं सीजीपीएससी में सफलता हासिल करने वाले जिले के होनहार युवाओं को भी सम्मानित किया गया।

समाजसेवी संस्थाओं और मदरसा विद्यार्थियों को सम्मान : समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाली रजा यूनिटी फाउंडेशन,गौ सेवा मंडल और मुस्लिम युवा मंच सहित अन्य संस्थाओं को सम्मानित किया गया। शहर के विभिन्न मदरसों के चयनित प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी पुरस्कार देकर उनका उत्साहवर्धन किया गया। कमेटी के कार्यक्रमों को लंबे समय से सफल बनाने में योगदान देने वाले मसूद आलम एवं फैजान अहमद को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इसके अलावा विभिन्न मोहल्लों में आकर्षक सजावट करने वाली कमेटियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान के आधार पर पुरस्कृत किया गया।

अध्यक्ष ने किया स्वागत,कार्यकारी अध्यक्ष ने जताया आभार : कार्यक्रम का स्वागत भाषण सीरतुन्नबी कमेटी के अध्यक्ष मेराज गुड्डू ने दिया। संचालन फैजान अहमद ने किया, जबकि कार्यकारी अध्यक्ष नियाजउद्दीन खान निक्की ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में हाजी रहमत खान, यासीन अंसारी,पार्षद हसन खान,अख्तर सिद्दीकी, बाबर इदरीशी,शादाब आलम रिजवी,हाजी अख्तर,मोहम्मद जाकिर,सादिक खान,कमाल खान,गुलशेर खान,साबिर मुन्ना,अशफाक कमर,सलमान इंजीनियर,हाजी रिजवान, मोहम्मद वसीम सहित कमेटी के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सक्रिय भूमिका रही। इस अवसर पर शफी अहमद,मोहम्मद इस्लाम,इरफान सिद्दीकी,जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष बालकृष्ण पाठक,अशफाक अली,रशीद अंसारी,दानिश रफीक,नगर निगम सभापति हरविंदर सिंह टिनी,विद्यानंद मिश्रा,संजय अंबष्ट मिश्र,द्वितेंद्र मिश्रा,आलोक दुबे,संजय मित्तल सहित बड़ी संख्या में विभिन्न समाजों के नागरिक एवं

जुलूस से लेकर मंच तक दिखी सामाजिक एकता

ईद मिलादुन्नबी के मौके पर निकले जुलूस और कला केंद्र मैदान में आयोजित कार्यक्रम ने शहर में धार्मिक सौहार्द और सामाजिक एकता का संदेश दिया। आयोजन में विभिन्न समुदायों की सहभागिता ने यह संदेश दिया कि अंबिकापुर की पहचान केवल त्योहार मनाने से नहीं, बल्कि एक-दूसरे के त्योहारों और भावनाओं का सम्मान करने से भी मजबूत होती है।

सैनिक स्कूल अंबिकापुर का 18 वां स्थापना दिवस 1 सितंबर को

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल होंगे मुख्य अतिथि,गार्ड ऑफ ऑनर से होगा स्वागत,कैडेट्स देंगे रंगारंग प्रस्तुतियां

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

सैनिक स्कूल अंबिकापुर अपने 18वें संस्थापक दिवस समारोह को गरिमामय एवं उत्साहपूर्ण माहौल में मनाने जा रहा है। समारोह का आयोजन मंगलवार,1 सितंबर 2026 को सुबह 11 बजे सैनिक स्कूल परिसर में किया जाएगा। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ शासन के पर्यटन एवं संस्कृति,धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री राजेश अग्रवाल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

गार्ड ऑफ ऑनर से होगा स्वागत : समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि के आगमन के साथ होगी। इसके बाद कैडेट्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाएगा। मुख्य अतिथि के हाथों वृक्षारोपण एवं औपचारिक दीप प्रज्वलन कराया जाएगा। इसके बाद स्थापना दिवस केक सेरेमनी,स्वागत भाषण और विभिन्न सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

कैडेट्स की प्रतिभा भी दिखेगी : समारोह में सैनिक स्कूल के कैडेट्स अपनी विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इसके बाद प्रस्तुति समारोह आयोजित किया जाएगा। मुख्य अतिथि द्वारा समारोह को संबोधित करने के बाद धन्यवाद प्रस्ताव एवं ग्रुप फोटो का कार्यक्रम होगा। समारोह के समापन पर स्टाफ के साथ चाय की व्यवस्था भी रहेगी।

स्कूल परिवार ने किया आमंत्रित : सैनिक स्कूल के प्रधान अधिकारी कर्नल राजेश बेंदा, अधिकारी-कर्मचारी एवं कैडेट्स ने इस अवसर पर गणमान्य नागरिकों, अभिभावकों एवं शुभचिंतकों को समारोह में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया है। स्कूल परिवार ने कहा कि संस्थान के 18वें स्थापना दिवस पर अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति समारोह के उत्साह को और बढ़ाएगी।

समय-सारिणी...

- 11:00 बजे - मुख्य अतिथि का आगमन
- 11:10 बजे - गार्ड ऑफ ऑनर
- 11:15 बजे - वृक्षारोपण व दीप प्रज्वलन
- इसके बाद - केक सेरेमनी, स्वागत भाषण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रस्तुति समारोह व मुख्य अतिथि का संबोधन
- 12:15 बजे - धन्यवाद प्रस्ताव एवं ग्रुप फोटो
- 12:30 बजे - प्रस्थान

रक्षाबंधन पर घर जाने की बात को लेकर विवाद,युवक ने गला काटकर दी जान

लिव-इन में रह रहे युवक-युवती ने काटा अपना गला,युवक की मौत...युवती गंभीर

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

गांधीनगर थाना क्षेत्र के सुभाषनगर में बुधवार सुबह लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे युवक-युवती ने चाकू से अपना गला काट लिया। घटना में युवक की मौत हो गई, जबकि गंभीर रूप से घायल युवती को मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार रक्षाबंधन पर युवती के घर जाने की बात को लेकर दोनों के बीच विवाद हुआ था। पुलिस मामले की जांच कर रही है। दरिमा निवासी मोहन पैंकरा (34) और सूरजपुर जिले के जयनगर थाना क्षेत्र के ग्राम कंदरई निवासी महिमा सिदार (30) करीब 10 साल से लिव-इन रिलेशनशिप में रह रहे थे। करीब दो माह पहले ही दोनों सुभाषनगर में सरस्वती महाविद्यालय के पास किराए के मकान में रहने आए थे। पुलिस के अनुसार बुधवार सुबह करीब 6.30 बजे महिमा ने रक्षाबंधन पर घर जाने की बात कही। इसी बात को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया। विवाद के बाद महिमा बाथरूम में चली गई। कुछ देर बाद बाहर आई तो मोहन दरवाजे के पास खून से लथपथ पड़ा था। उसका गला कटा हुआ था। मोहन को इस हालत में देखकर महिमा ने शोर मचाया। मकान मालिक और पड़ोसी मौके पर पहुंचे। इसी दौरान महिमा ने भी चाकू से अपना गला काट लिया। सूचना पर मकान मालिक ने डायल-112 को फोन किया और पुलिस को जानकारी दी।

फॉरेंसिक टीम ने जुटाए साक्ष्य : सूचना मिलते ही गांधीनगर पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल की जांच कर आवश्यक साक्ष्य जुटाए। मोहन के शव को पीएम के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेजा गया। वहीं गंभीर रूप से घायल महिमा को तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार जारी है। पुलिस ने दोनों के परिजनों को घटना की सूचना दे दी है।

युवती के बयान के आधार पर जांच : घायल महिमा ने पुलिस को बताया कि मोहन ने चाकू से खुद अपना गला काट लिया था। बाथरूम से लौटने पर उसे इस हालत में देखकर उसने भी अपने गले पर चाकू से वार कर लिया। फिलहाल पुलिस मकान मालिक और युवती के बयान के साथ घटनास्थल से मिले साक्ष्यों के आधार पर मामले की जांच कर रही है।

प्रश्नपत्र लीक से लेकर छात्र आंदोलन तक... शिक्षा व्यवस्था पर आचार्य दिग्विजय सिंह तोमर ने उठाया सवाल

शिक्षा मंत्री की योग्यता,कोचिंग संस्थानों की भूमिका और परीक्षा प्रणाली पर तीखी टिप्पणी...प्रधानमंत्री से लेकर सरकार की कार्यप्रणाली तक पर साधा निशाना

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्नपत्र लीक और परीक्षा व्यवस्था को लेकर जारी बहस के बीच अंबिकापुर निवासी आचार्य दिग्विजय सिंह तोमर ने सोशल मीडिया के माध्यम से सरकार, शिक्षा व्यवस्था और निजी कोचिंग संस्थानों की कार्यप्रणाली पर तीखी टिप्पणी की है। अपनी टिप्पणी में उन्होंने प्रश्नपत्र लीक की घटनाओं को लेकर गंभीर सवाल उठाते हुए परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की मांग उठाई। आचार्य तोमर ने अपनी टिप्पणी की शुरुआत 'बीए पास शिक्षा मंत्री' जैसे व्यंग्यात्मक संबोधन से करते हुए शिक्षा व्यवस्था पर राजनीतिक कटाक्ष किया। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ निजी कोचिंग संस्थानों द्वारा परीक्षा के प्रश्नपत्रों की जानकारी हासिल कर अपने विद्यार्थियों को

अनुचित लाभ पहुंचाने की कोशिश की जाती है। हालांकि,उनकी टिप्पणी में किसी विशेष संस्थान अथवा व्यक्ति के खिलाफ इन आरोपों के समर्थन में कोई दस्तावेज या विशिष्ट प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

कोचिंग और चयन प्रक्रिया के रिश्तों पर भी सवाल : उन्होंने कहा कि निजी कोचिंग संचालकों का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को पढ़ाना नहीं रह गया है,बल्कि कुछ लोग कथित रूप से चयन प्रक्रिया से जुड़े लोगों से संबंध स्थापित कर अपने संस्थान के विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में लाभ दिलाने का प्रयास करते हैं। आचार्य तोमर ने इसे पुरानी प्रवृत्ति बताते हुए कहा कि सोशल मीडिया के दौर में ऐसी गतिविधियां पहले की तुलना में तेजी से सार्वजनिक हो जाती हैं।

'पैसा फेंको,तमाशा देखो' वाली व्यवस्था पर कटाक्ष : अपनी टिप्पणी में उन्होंने 'पैसा फेंको,तमाशा देखो' कहावत का उल्लेख करते हुए व्यवस्था में पैसे और प्रभाव की भूमिका पर व्यंग्य किया। उनका कहना है कि यदि परीक्षा और भर्ती जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में पारदर्शिता पर सवाल खड़े होते हैं तो इसका सबसे बड़ा नुकसान उन युवाओं को होता है,जो वर्षों तक मेहनत और तैयारी के बाद परीक्षा में बैठते हैं।

छात्र आंदोलनों को बताया राजनीतिक असंतोष का मंच

आचार्य तोमर ने छात्र आंदोलनों को लेकर भी तीखी राजनीतिक टिप्पणी की। उन्होंने दावा किया कि परीक्षा संबंधी विवादों से शुरू होने वाले आंदोलन धीरे-धीरे व्यापक राजनीतिक असंतोष का रूप ले सकते हैं। उन्होंने विपक्षी राजनीतिक दलों पर भी आंदोलन को राजनीतिक समर्थन देकर सरकार के खिलाफ माहौल बनाने का आरोप लगाया। हालांकि,उनकी टिप्पणी में कुछ संगठनों और राजनीतिक शक्तियों के संबंध में लगाए गए आरोपों के समर्थन में कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसलिए इन दावों को आचार्य तोमर के आरोप/राजनीतिक मत के रूप में ही देखा जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री से कार्रवाई की मांग,पुलिस कार्रवाई पर भी सवाल

आचार्य तोमर ने केंद्र सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए प्रधानमंत्री से जिम्मेदारी तय करने की मांग की। उन्होंने छात्र आंदोलन के दौरान पुलिस कार्रवाई को भी निंदनीय बताते हुए कहा कि शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मांग रखने वाले छात्रों के साथ कठोरता नहीं होनी चाहिए। साथ ही उन्होंने हिंसक गतिविधियों में शामिल लोगों के खिलाफ भी कठोर कार्रवाई की मांग की। उनका कहना है कि आंदोलन चाहे छात्रों का हो या किसी राजनीतिक समूह का,कानून हाथ में लेने वालों पर निष्पक्ष कार्रवाई आवश्यक है।

अब असली सवाल... परीक्षा व्यवस्था कितनी पारदर्शी?

आचार्य तोमर की टिप्पणी ने एक बार फिर प्रश्नपत्र लीक,कोचिंग संस्थानों की भूमिका,चयन प्रक्रिया की पारदर्शिता और छात्र आंदोलनों पर बहस को सामने ला दिया है। आरोप अपनी जगह हैं,लेकिन बड़ा सवाल यह है कि परीक्षा प्रणाली में ऐसी खामियों की गुंजाइश क्यों बनती है और यदि कहीं प्रश्नपत्र लीक या भर्ती प्रक्रिया में गड़बड़ी के प्रमाण मिलते हैं तो जिम्मेदारी तय करने की कार्रवाई कितनी तेज और निष्पक्ष होती है।

CMYK

मुख्यमंत्री के दौरे पर प्रशासन की 'फुल स्पीड' तैयारी,बदहाल सड़कों पर जनता की रफ्तार अब भी थमी...

कर्रा में धार्मिक आयोजन के लिए सुरक्षा...प्रोटोकॉल से लेकर हेलीपैड तक चाक-चौबंद इंतजाम,सवाल...जनता की रोजमर्रा की परेशानियों के लिए ऐसी ही तत्परता कब?

सुदामा राजवाड़े

बलरामपुर/राजपुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के 26 अगस्त को राजपुर विकासखंड के ग्राम कर्रा पहुंचने के साथ प्रशासनिक तैयारियां पूरी तरह सक्रिय नजर आईं। मुख्यमंत्री यहां श्री महारुद्र यज्ञ एवं शिव महापुराण कथा में शामिल हुए और बाबा कर्मेश्वर धाम में रुद्राभिषेक कर प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की। आधिकारिक जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री ने ग्राम कर्रा में मंगल भवन निर्माण की घोषणा भी की। मुख्यमंत्री के दौरे के मद्देनजर सुरक्षा,यातायात, प्रोटोकॉल और अन्य व्यवस्थाओं को लेकर प्रशासन की सक्रियता स्वाभाविक थी। लेकिन इसी सक्रियता ने क्षेत्र के लोगों के बीच एक पुराना सवाल फिर खड़ा कर दिया–जब वीआईपी दौरा होता है तो व्यवस्था इतनी तेजी से बदल सकती है, फिर आम आदमी की सड़क,पानी और दूसरी मूलभूत समस्याओं के लिए यही तत्परता क्यों नहीं दिखाई देती?

वीआईपी दौरे में व्यवस्था चाक-चौबंद,जनता पूछ रही अपना नंबर

मुख्यमंत्री का कार्यक्रम निर्धारित था और प्रशासन को सुरक्षा एवं प्रोटोकॉल की जिम्मेदारी निभानी ही थी। उपलब्ध कार्यक्रम विवरण के अनुसार मुख्यमंत्री दोपहर में कर्रा पहुंचे और धार्मिक आयोजन में शामिल हुए। लेकिन दूसरी ओर राजपुर और आसपास के क्षेत्रों में सड़क की स्थिति लंबे समय से चर्चा का विषय बनी हुई है। अंबिकापुर-रामानुजगंज मार्ग की बदहाली को लेकर पहले भी स्थानीय स्तर पर विरोध और ज्ञापन हो चुके हैं। मई 2026 में राजपुर में सड़क की खराब स्थिति, धूल और दुर्घटनाओं को लेकर प्रदर्शन तक हुआ था। यानी सवाल केवल आज का नहीं है। सवाल उस प्राथमिकता का है, जो सरकारी मशीनरी की कार्यक्षमता को लेकर जनता के मन में पैदा होती है।

'सरकारी मशीनरी की रफ्तार' पर व्यंग्य : मुख्यमंत्री का दौरा हो तो सड़क की निगरानी,सुरक्षा व्यवस्था,यातायात प्रबंधन और अधिकारियों की सक्रियता बढ़ना प्रशासनिक प्रक्रिया का हिस्सा है। लेकिन आम नागरिक की नजर से देखें तो तस्वीर कुछ ऐसी बनती है–

सरकार का काफिला आए
तो सड़क जाग जाती है...
जनता रोज निकले तो
गड्ढे ही गड्ढे नजर आते हैं...

यही अंतर सरकारी प्राथमिकताओं पर सवाल खड़ा करता है। वीआईपी व्यवस्था में तत्परता दिखाना गलत नहीं,लेकिन उसी तत्परता का एक हिस्सा यदि स्थायी रूप से जनता की मूलभूत सुविधाओं पर भी दिखाई दे तो उसका लाभ हजारों लोगों को मिलेगा।

निजी आयोजन का सवाल—दावे और तथ्य अलग-अलग रखना जरूरी : कार्यक्रम को स्थानीय स्तर पर मुख्यमंत्री के पीएसओ से जुड़े निजी आयोजन के रूप में चर्चा में बताया जा रहा है। हालांकि,उपलब्ध आधिकारिक सूचना में इसे ग्राम कर्रा में आयोजित श्री महारुद्र यज्ञ एवं शिव महापुराण कथा के रूप में दर्ज किया गया है। इसलिए सरकारी संसाधनों के कथित व्यापक इस्तेमाल,करोड़ों रुपये के खर्च अथवा आयोजन के निजी स्वरूप को लेकर किए जा रहे दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। यदि सरकारी धन से अस्थायी निर्माण,सड़क सुधार,हेलीपैड, पार्किंग या अन्य व्यवस्थाओं पर खर्च हुआ है तो खर्च की राशि,मद और भुगतान का स्रोत सार्वजनिक किया जाना पारदर्शिता की दृष्टि से उचित होगा।

सड़क पर गड्ढे,बारिश में आफत और हादसों का खतरा

क्षेत्र की सड़क समस्या का असर केवल आवागमन तक सीमित नहीं है। हाल ही में 22 अगस्त को राजपुर-कुसमी मार्ग पर सेवारी के पास पिकअप और बाक्साइट लदे ट्रक की भिड़ंत में तीन मजदूरों की मौत और सात लोगों के गंभीर घायल होने की खबर सामने आई थी। इससे पहले भी अंबिकापुर से रामानुजगंज जाने वाले मार्ग की जर्जर स्थिति को लेकर लगातार सवाल उठते रहे हैं। 2025 की रिपोर्टों में एनएच-343 पर बड़े गड्ढों,धूल और दुर्घटनाओं की समस्या का उल्लेख किया गया था। ऐसे में स्थानीय नागरिकों का सवाल वाजिब है–अगर कुछ दिनों की तैयारी में किसी खास कार्यक्रम के लिए व्यवस्था दुरुस्त की जा सकती है, तो वर्षों से परेशान जनता के लिए स्थायी समाधान क्यों नहीं?

स्थानीय मीडिया की उपेक्षा पर भी उठ सकते हैं सवाल...

मुख्यमंत्री का दौरा जिले के लिए महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं प्रशासनिक घटना होता है। ऐसे में स्थानीय पत्रकारों को कार्यक्रम की जानकारी,प्रवेश और कवरेज व्यवस्था के संबंध में स्पष्ट सूचना नहीं मिलने की शिकायतें हैं तो प्रशासन और आयोजन समिति को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। सरकार की उपलब्धियां जनता तक पहुंचाने के लिए मीडिया जरूरी है,तो सवाल पूछने के अधिकार के लिए भी मीडिया उतना ही जरूरी है।

अब प्रशासन से जनता की अपेक्षा साफ

मुख्यमंत्री ने कर्रा में मंगल भवन निर्माण की घोषणा की है। अब क्षेत्र की जनता यह भी उम्मीद कर रही है कि घोषणाओं के साथ सड़क,पेयजल,स्वास्थ्य,शिक्षा और यातायात जैसी रोजमर्रा की समस्याओं पर भी उसी स्तर की प्रशासनिक तत्परता दिखाई दे। क्योंकि मुख्यमंत्री का दौरा कुछ घंटों का होता है,लेकिन जर्जर सड़क से गुजरने की मजबूरी जनता की रोज की कहानी है।

सवाल मुख्यमंत्री के दौरे की व्यवस्था पर नहीं,बल्कि व्यवस्था की प्राथमिकताओं पर है...क्या आम आदमी के लिए भी कभी ऐसी ही 'वीआईपी' तत्परता दिखाई देगी?

बेकाबू ट्रक ने स्ट्रीट लाइट के खंभे तोड़े,डिवाइडर पर चढ़ा

-संवाददाता-
लखनपुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

लखनपुर थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे-130 पर मंगलवार रात तेज रफ्तार ट्रक बेकाबू हो गया। केवरा चौक के पास ट्रक ने सडक़ किनारे लगे कई स्ट्रीट लाइट के खंभों को तोड़ दिया और डिवाइडर पर जा चढ़ा। इसके बाद ट्रक ने एक कार को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे के बाद चालक ट्रक छोडक़र मौके से फरार हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रक अंबिकापुर की ओर से तेज रफ्तार में लखनपुर की तरफ आ रहा था। केवरा चौक के पास अचानक ट्रक अनियंत्रित हो गया। सडक़ किनारे लगे स्ट्रीट लाइट के खंभों को टक्कर मारते हुए ट्रक डिवाइडर पर चढ़ गया। आगे बढऩे के दौरान उसने बालेनो कार को भी पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। सूचना पर लखनपुर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। पुलिस ने ट्रक को कब्जे में लेकर फरार चालक की तलाश शुरू कर दी है। हादसे में किसी के हताहत होने की सूचना फिलहाल नहीं है।

तेज रफ्तार कार ने स्कूटी को मारी टक्कर,युवक की मौत

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

सीतापुर थाना क्षेत्र के विशुनपुर चौक के आगे 23 अगस्त को हुए सडक़ हादसे में घायल युवक की इलाज के दौरान मौत हो गई। सामने से आ रही तेज रफ्तार कार ने स्कूटी को टक्कर मार दी थी। हादसे में स्कूटी सवार दूसरे युवक को भी गंभीर चोटें आई हैं। पुलिस ने जांच के बाद कार चालक के खिलाफ अपराध दर्ज कर लिया है। पुलिस के अनुसार खलिबा निवासी मनपहरू चंवर (29) और सोमारू 23 अगस्त की दोपहर स्कूटी क्रमांक सीजी 15 ईजी 6221 से बरगीडीह से सीतापुर की ओर जा रहे थे। करीब 12.30 बजे दोनों विशुनपुर चौक से आगे पहुंचे,तभी सामने से आ रही कार क्रमांक सीजी 15 डीसी 1156 के चालक ने वाहन को तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाते हुए स्कूटी को टक्कर मार दी। दोनों को सीतापुर अस्पताल में भर्ती कराया गया। इलाज के दौरान मनपहरू की मौत हो गई।

महामाया बुक डिपो पर ग्राहकों की शिकायतें गंभीर,जांच हुई तो खुल सकती है कई परतें...

बिल मांगने पर बिल नहीं देने का आरोप,दुकान के सामने सड़क घिरने से जाम,संचालक के कथित व्यवहार से भी ग्राहक परेशान

किताब-कॉपी खरीदने पहुंचने वाले लोगों को सुविधा के बजाय परेशानी,संबंधित विभागों से जांच व कार्रवाई की मांग

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

शहर में विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच शैक्षणिक सामग्री के लिए जाना-पहचाना नाम महामाया बुक डिपो इन दिनों ग्राहकों की शिकायतों को लेकर सवालों के घेरे में है। ग्राहकों द्वारा दुकान संचालन के तरीके,खरीदारी का बिल उपलब्ध नहीं कराने,दुकान के सामने वाहनों की अव्यवस्थित पार्किंग से सड़क पर जाम लगने तथा कथित तौर पर ग्राहकों के साथ उचित व्यवहार नहीं किए जाने जैसी शिकायतें सामने आ रही हैं। यदि शिकायतों की निष्पक्ष जांच की जाए तो वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो सकती है।

बिल मांगने पर क्यों नहीं मिलता बिल?

ग्राहकों की सबसे महत्वपूर्ण शिकायत खरीदारी के बाद बिल नहीं दिए जाने को लेकर है। ग्राहकों का कहना है कि किताब, कॉपी,स्टेशनरी अथवा अन्य सामग्री खरीदने के बाद जब बिल की मांग की जाती है,तो कई बार उन्हें बिल उपलब्ध नहीं कराया जाता। बड़ी मात्रा में स्कूल-कॉलेज की सामग्री खरीदने वाले अभिभावकों और संस्थानों के लिए बिल खरीदारी का महत्वपूर्ण दस्तावेज होता है। ऐसे में बिलिंग व्यवस्था को लेकर उठ रही शिकायतों की संबंधित विभाग द्वारा जांच किया जाना जरूरी है। दुकान पर बिलिंग किस तरह की जा रही है,प्रत्येक बिक्री का रिकॉर्ड संधारित है या नहीं और ग्राहकों को नियमानुसार बिल उपलब्ध कराया जा रहा है या नहीं–इन बिंदुओं की जांच से स्थिति साफ हो सकती है।

व्यस्त सड़क पर दुकान,बाहर वाहन खड़े होने से जाम : महामाया बुक डिपो जिस मार्ग पर संचालित है,वह पहले से ही व्यस्त माना जाता है। ग्राहकों के अनुसार दुकान पर खरीदारी के लिए आने वाले लोग अपने दोपहिया एवं चारपहिया वाहन सड़क के किनारे खड़े कर देते हैं। इससे सड़क की उपयोगी चौड़ाई कम हो जाती है और कई बार जाम जैसी स्थिति बनती है। सबसे ज्यादा परेशानी उस समय होती है जब एक साथ कई ग्राहक दुकान पर पहुंचते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि यातायात विभाग एवं नगर निगम की टीम मौके का निरीक्षण कर यह देखे कि दुकान के सामने वाहनों की पार्किंग अथवा किसी अन्य तरीके से सार्वजनिक मार्ग बाधित तो नहीं हो रहा है।

ग्राहक बोले...सामान खरीदना है, बहस नहीं : कुछ ग्राहकों ने दुकान संचालक के कथित व्यवहार को लेकर भी नाराजगी जताई है। उनका कहना है कि कीमत,सामान की उपलब्धता अथवा बिल जैसी सामान्य जानकारी मांगने पर कई बार उन्हें असहज स्थिति का सामना करना पड़ता है। हालांकि इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि होना बाकी है और दुकान संचालक का पक्ष सामने आना भी आवश्यक है। लेकिन लगातार शिकायतें सामने आती हैं तो ग्राहक सेवा और व्यवहार को लेकर भी संबंधित प्रशासन को स्थिति का संज्ञान लेना चाहिए।

जांच के दायरे में आए ये बिंदु

- ग्राहकों की शिकायतों को देखते हुए संबंधित विभाग निम्न बिंदुओं पर जांच कर सकते हैं...
- ग्राहकों को खरीदारी का बिल/रसीद उपलब्ध कराई जा रही है या नहीं।
- बिक्री एवं बिलिंग का रिकॉर्ड नियमानुसार संधारित किया जा रहा है या नहीं।
- दुकान के सामने सड़क अथवा सार्वजनिक स्थान पर अवैध पार्किंग या अतिक्रमण तो नहीं है।
- दुकान के कारण यातायात बाधित होने की शिकायत की वास्तविक स्थिति क्या है।
- दुकान के बाहर ग्राहकों की भीड़ एवं वाहनों के लिए कोई व्यवस्थित व्यवस्था है या नहीं।
- ग्राहकों से प्राप्त शिकायतों का रिकॉर्ड एवं उनकी प्रकृति क्या है।
- संबंधित कर/वाणिज्यिक विभाग के स्तर पर आवश्यक दस्तावेज एवं पंजीयन की स्थिति नियमानुसार है या नहीं।

कौन-कौन से विभाग कर सकते हैं कार्रवाई? मामले में शिकायत की प्रकृति के अनुसार नगर निगम, यातायात पुलिस,खाद्य एवं औषधि प्रशासन नहीं बल्कि संबंधित वाणिज्यिक/कर विभाग तथा उपभोक्ता संरक्षण से जुड़े अधिकारियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्राधिकार में जांच की जा सकती है। विशेष रूप से सड़क पर यातायात बाधित होने की शिकायत पर यातायात पुलिस एवं नगर निगम का संयुक्त निरीक्षण प्रभावी हो सकता है।

सवाल सिर्फ एक दुकान का नहीं,ग्राहक अधिकार का है : किताबें और शैक्षणिक सामग्री विद्यार्थियों की आवश्यकता से जुड़ी वस्तुएं हैं। ऐसे कारोबार में ग्राहकों को स्पष्ट कीमत, उचित व्यवहार और खरीदारी का प्रमाण मिलना महत्वपूर्ण है। वहीं सार्वजनिक सड़क पर व्यापारिक गतिविधियों अथवा पार्किंग के कारण आम राहगीरों को परेशानी होती है तो यह भी प्रशासन के लिए विचारणीय विषय है।

एनएच-343 की बदहाली से बढ़ा हादसों का खतरा,गड्ढों से बचने रॉन्ग साइड चल रहे भारी वाहन

निर्माण की धीमी रफ्तार से सड़क बनी मुसीबत...बस कंडक्टर की कथित दबंगई से विवाद,एंबुलेंस तक को रास्ता देने में परेशानी

-संवाददाता-
बलरामपुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

अंबिकापुर से बलरामपुर-रामानुजगंज को जोड़ने वाला राष्ट्रीय राजमार्ग-343 इन दिनों निर्माण और बदहाल सड़क व्यवस्था के बीच फंसा नजर आ रहा है। सड़क पर जगह-जगह गड्ढे,नाली जैसे कटाव,निर्माण सामग्री और अधूरे हिस्सों के कारण वाहन चालकों को रोज जोखिम उठाकर सफर करना पड़ रहा है। हालात इतने खराब बताए जा रहे हैं कि कई स्थानों पर बड़े वाहन सड़क की खराब स्थिति से बचने के लिए रॉन्ग साइड में जाने को मजबूर हो रहे हैं। इससे सामने से आने वाले छोटे वाहनों, बाइक और साइकिल सवारों के लिए दुर्घटना का खतरा बढ़ गया है।

निर्माण चल रहा है तो रखरखाव कौन करेगा? स्थानीय लोगों का आरोप है कि सड़क निर्माण का काम बेहद धीमी गति से चल रहा है। कई स्थानों पर पुरानी सड़क को खोदने या काटने के बाद लंबे समय तक उसे व्यवस्थित नहीं किया जा रहा है। इससे बारिश के दौरान गड्ढों में पानी भर जाता है और सड़क की वास्तविक स्थिति का अंदाजा लगाना मुश्किल हो जाता है। लोगों का सवाल है कि जब तक नई सड़क पूरी तरह तैयार नहीं हो जाती, तब तक आवागमन योग्य सड़क बनाए रखने की जिम्मेदारी किसकी है?

निर्माणाधीन मार्ग पर पर्याप्त संकेतक, बैरिकेडिंग,डायवर्जन और सुरक्षित आवागमन की व्यवस्था नहीं होने की शिकायतें भी सामने आ रही हैं। यदि निर्माण एजेंसी और संबंधित विभाग नियमित निरीक्षण करें तो कई छोटी समस्याओं को बड़े हादसे में बदलने से रोका जा सकता है।

गड्ढों से बचने रॉन्ग साइड,फिर शुरू होता है 'साइड' का विवाद : सड़क की खराब स्थिति का सबसे खतरनाक असर यातायात व्यवस्था पर पड़ रहा है। जहां सड़क का एक हिस्सा गड्ढों या निर्माण कार्य के कारण बाधित है, वहां बस और भारी वाहन चालक दूसरी लेन में चले जाते हैं। सामने से आने वाले छोटे वाहन चालकों के लिए अचानक रास्ता बदलना मुश्किल हो जाता है। स्थानीय लोगों के अनुसार,25 अगस्त को चंद्रगढ़ चौक के पास निर्माणाधीन पुलिया के समीप ऐसा ही एक विवाद सामने आया। आरोप है कि अंबिकापुर से रामानुजगंज की ओर जा रही 'आदिशक्ति' बस रॉन्ग साइड से आ रही थी और बाइक चालक से साइड को लेकर विवाद हो गया। बाइक चालक ने आरोप लगाया कि बस के कंडक्टर ने कथित तौर पर गाली-गलौज करते हुए बस चढ़ा देने की धमकी दी। हालांकि इस घटना की स्वतंत्र पुष्टि और पुलिस कार्रवाई की जानकारी सामने नहीं आई है। संबंधित पक्ष का पक्ष भी उपलब्ध नहीं है।

एम्बुलेंस को रास्ता देना भी चुनौती : सबसे गंभीर स्थिति तब बनती है जब इसी मार्ग से एम्बुलेंस या अन्य आपातकालीन वाहन गुजरते हैं। सड़क संकरी होने, निर्माण सामग्री और गड्ढों के कारण कई जगह वाहनों को एक-दूसरे को रास्ता देने में परेशानी होती है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि सामान्य वाहन कुछ देर रुककर निकल भी जाएं, लेकिन आपातकालीन वाहन के लिए हर मिनट महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में सड़क निर्माण की अव्यवस्था किसी मरीज के लिए गंभीर परिणाम पैदा कर सकती है।

'पेटी कॉन्ट्रैक्ट' पर उठे सवाल, विभागीय निगरानी पर भी नजर : स्थानीय स्तर पर यह भी चर्चा है कि मुख्य निर्माण एजेंसी द्वारा काम छोटे ठेकेदारों को सौंपे जाने के कारण कार्य की गुणवत्ता और गति प्रभावित हो रही है। हालांकि इस संबंध में संबंधित विभाग या निर्माण एजेंसी की आधिकारिक पुष्टि उपलब्ध नहीं है। ग्रामीणों का आरोप है कि विभागीय अधिकारियों की नियमित निगरानी नहीं होने से निर्माण एजेंसी मनमाने ढंग से काम कर रही है। कुछ लोगों ने कथित कमीशनखोरी तक के आरोप लगाए हैं, लेकिन इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। ऐसे आरोपों की स्थिति में विभागीय जांच के माध्यम से तथ्य सामने आना जरूरी है।

शिकायतों के बाद भी समाधान नहीं, ग्रामीणों ने दी चक्काजाम की चेतावनी : स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क की स्थिति को लेकर मौखिक और लिखित शिकायतें की जा चुकी हैं,लेकिन समस्या का स्थायी समाधान नहीं हुआ। अब ग्रामीणों और क्षेत्रवासियों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि सड़क के गड्ढों की तत्काल मरम्मत, सुरक्षित डायवर्जन, पर्याप्त संकेतक और निर्माण कार्य को तेज करने की दिशा में ठोस कार्रवाई नहीं हुई तो चक्काजाम और आंदोलन किया जा सकता है।

एसडीएम से संपर्क का प्रयास, नहीं मिला जवाब : मामले में प्रशासन का पक्ष जानने के लिए राजपुर एसडीएम देवेंद्र प्रधान से उनके मोबाइल नंबर पर संपर्क करने का प्रयास किया गया, लेकिन उनके द्वारा फोन रिसीव नहीं किया गया। प्रशासन या संबंधित निर्माण एजेंसी का आधिकारिक पक्ष प्राप्त होने पर उसे भी समाचार में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

सवाल सीधा है—सड़क बनेगी कब और तब तक सुरक्षित सफर कौन सुनिश्चित करेगा? एनएच-343 पर निर्माण कार्य जरूरी है, लेकिन निर्माण के नाम पर यात्रियों की सुरक्षा से समझौता नहीं किया जा सकता। सड़क कब पूरी होगी, यह तकनीकी और प्रशासनिक प्रक्रिया का विषय है; लेकिन तब तक राहगीरों को सुरक्षित रास्ता देना संबंधित एजेंसी और विभाग की प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिए।

चांदनी चौक में घर से मांस बरामद, बजरंग दल कार्यकर्ता ने दर्ज कराई शिकायत

गाय को क्रूरता से काटकर मांस रखने का आरोप,पुलिस ने अपराध किया दर्ज

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

मणिपुर थाना क्षेत्र के चांदनी चौक में किराए के मकान से मांस बरामद होने का मामला सामने आया है। बजरंग दल के जिला संयोजक अंकित दास की शिकायत पर पुलिस ने झारखंड निवासी इरफान अंसारी के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शिकायतकर्ता ने मांस को गाय का बताते हुए धार्मिक भावनाएं आहत होने का आरोप लगाया है। पुलिस के अनुसार मठपारा निवासी अंकित दास ने 25 अगस्त को थाने में लिखित शिकायत दी। उन्होंने बताया कि उन्हें गांव के लोगों से सूचना मिली थी कि चांदनी चौक में एक व्यक्ति ने घर में गाय को काटकर उसका मांस रखा है। सूचना के बाद वह बजरंग दल के कार्यकर्ताओं के साथ मौके पर पहुंचे। वहां झारखंड निवासी इरफान अंसारी के किराए के मकान में प्लास्टिक की थैली में ताजा मांस रखा मिला। शिकायत में मांस को गाय का बताया गया है। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई, जिसके बाद पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की।

जातिगत गाली-गलौज और टांगी से हमला करने का आरोप..युवक की शिकायत पर पंकज मिश्रा समेत चार के खिलाफ मामला दर्ज

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

लुंड्रा थाना क्षेत्र के झेराडीह गांव में जातिगत गाली-गलौज, मारपीट और जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पीड़ित की शिकायत पर अजाक थाना पुलिस ने चार लोग के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार झेराडीह निवासी ऋषि कुमार (26) ने शिकायत में बताया कि 24 अगस्त की शाम करीब 5.30 बजे वह पंकज मिश्रा से एक लडक़ी को लेकर गांव में बदनाम करने की बात पूछने गया था। आरोप है कि इस दौरान पंकज मिश्रा ने उसके साथ जातिसूचक गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की धमकी दी और हाथ में रखी टांगी से सिर व बाएं पैर पर वार कर दिया। ऋषि के अनुसार विवाद के दौरान शोर सुनकर पंकज के ससुर मंत्री राम, देवती और लीला बाई भी मौके पर पहुंचे और उसके साथ मारपीट की। हमले में उसके सिर में चोट लगने से खून निकलने लगा।

21 अगस्त को हैंडओवर,25 अगस्त को फिर ताला!

हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन पर उठे सवाल

हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी नहीं थमा,माझगवां राशन दुकान विवाद,चार दिन बाद फिर ताले का आरोप

- आदेश बहाली का, प्रभार भी मिला...फिर राशन दुकान पर दोबारा ताला किसने लगाया?
- माझगवां राशन दुकान विवाद में नया मोड़, हाईकोर्ट के आदेश के बाद फिर ताला लगाने का आरोप
- हाईकोर्ट के आदेश की पालन के बाद भी विवाद बरकरार, राशन दुकान पर फिर ताले की शिकायत
- अपर कलेक्टर से बहाली,हाईकोर्ट से राहत...फिर दुकान बंद कराने का आरोप
- राशन दुकान का प्रभार मिलने के चार दिन बाद फिर ताला, प्रशासन के सामने खड़े हुए बड़े सवाल
- हाईकोर्ट के आदेश के बाद खुला रास्ता, फिर ताले ने रोक दिया राशन वितरण

माझगवां राशन दुकानः आदेश,हैंडओवर और फिर ताला...आखिर किसके आदेश पर?

हाईकोर्ट के आदेश के बाद भी राशन दुकान पर विवाद,ताला लगाने वालों पर कार्रवाई की मांग

अपर कलेक्टर के बहाली आदेश के बाद हाईकोर्ट ने 10 दिन में प्रभार सौंपने के दिए थे निर्देश, शिकायतकर्ता ने ताला खुलवाने और जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग की...

अपर कलेक्टर के बहाली आदेश और हाईकोर्ट के 10 दिन में प्रभार सौंपने के निर्देश के बाद 21 अगस्त को मिला था प्रभार

25 अगस्त को दुकान पर कथित रूप से दोबारा ताला लगाने की शिकायत, कार्रवाई और एफआईआर की मांग...

-रवि सिंह-

बैकुंठपुर/कोरिया,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

ग्राम पंचायत माझगवां की शासकीय उचित मूल्य दुकान को लेकर चल रहा विवाद अब एक नए मोड़ पर पहुंच गया है,पहले दुकान का आबंटन निरस्त हुआ,फिर अपर कलेक्टर के आदेश से बहाल हुआ और उसके बाद मामला हाईकोर्ट तक पहुंचा,छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट, बिलासपुर ने 18 अगस्त 2026 को संबंधित अधिकारियों को अपर कलेक्टर बैकुंठपुर के 2 जुलाई 2026 के आदेश का पालन करते हुए बहाल उचित मूल्य दुकान का प्रभार याचिकाकर्ता को 10 दिनों के भीतर सौंपने का निर्देश दिया था। दस्तावेज में अब यह आरोप सामने आया है कि हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन में 21 अगस्त 2026 को दुकान का प्रभार सौंपे जाने के बावजूद 25 अगस्त की सुबह दुकान पर दोबारा ताला लगाए जाने की स्थिति सामने आई,मामले में संबंधित आवेदिका ने कलेक्टर,पुलिस अधीक्षक, अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) और थाना प्रभारी को लिखित शिकायत देकर ताला खुलवाने, ग्रामीणों को खाद्यान्न वितरण सुनिश्चित कराने तथा जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

पहले निरस्त हुआ था दुकान का आबंटन

मामला माझगवां स्थित शासकीय उचित मूल्य दुकान आईडी क्रमांक 532001086 से जुड़ा है,शिकायत में उल्लेख किया गया है कि दुकान के संबंध में पहले अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व), बैकुंठपुर द्वारा आदेश पारित कर दुकान का आबंटन निरस्त किया गया था,इसके बाद अपील की गई और अपर कलेक्टर बैकुंठपुर ने 2 जुलाई 2026 को आदेश पारित करते हुए दुकान का आबंटन बहाल कर दिया, इसके बाद मामला हाईकोर्ट पहुंचा, हाईकोर्ट ने 18 अगस्त को बहाल उचित मूल्य दुकान का प्रभार याचिकाकर्ता को 10 दिनों के भीतर सौंपने का निर्देश दिया,शिकायत में कहा गया है कि प्रशासन ने इस आदेश के अनुपालन में 21 अगस्त को आवेदिका को दुकान का हैंडओवर कर दिया था।

25 अगस्त को दुकान खोलने पहुंची तो सामने आया नया विवाद...

शिकायत के अनुसार आवेदिका ने ग्रामीणों को पूर्व सूचना दी थी कि 25 अगस्त 2026 को सुबह 9 बजे उचित मूल्य की दुकान खोली जाएगी और विधिवत खाद्यान्न का वितरण किया जाएगा,इसी के तहत जब वह दुकान खोलने पहुंची तो दुकान के पहले से लगे ताले के अतिरिक्त एक बड़ा ताला लगा हुआ मिला,दस्तावेज में आवेदिका ने आरोप लगाया है कि जब उसने संबंधित लोगों से इस अतिरिक्त ताले के संबंध में पूछा तो कथित रूप से यह जवाब दिया गया कि 'हम लोग ताला लगाए हैं,सोसायटी नहीं चलाने देंगे,यह आरोप शिकायतकर्ता की ओर से लगाया गया है और इसकी स्वतंत्र पुष्टि अभी आवश्यक है।

हाईकोर्ट के आदेश के बाद फिर ताला लगाने का आरोप...

यही बिंदु पूरे मामले को गंभीर बनाता है, यदि शिकायत में वर्णित घटनाक्रम सही है तो सवाल उठता है कि जब अपर कलेक्टर के आदेश से दुकान बहाल हो चुकी थी और हाईकोर्ट के निर्देश के बाद प्रशासन द्वारा 21 अगस्त को प्रभार भी सौंप दिया गया था,तो चार दिन बाद दुकान पर दोबारा ताला किसने लगाया और किस अधिकार से लगाया? क्या ताला लगाने वाले व्यक्ति के पास दुकान संचालन रोकने का कोई वैध आदेश था? क्या प्रशासन को इस संबंध में कोई शिकायत या आदेश प्राप्त हुआ था? यदि कोई नया विवाद या कानूनी प्रक्रिया लंबित थी,तो क्या उसकी सूचना संबंधित संचालिका को दी गई थी? इन सवालों का जवाब प्रशासनिक रिकॉर्ड और मौके की जांच से ही सामने आएगा।

शिकायत में अपराध दर्ज करने की मांग...

25 अगस्त को दी गई लिखित शिकायत में आवेदिका ने आरोप लगाया है कि अनावेदक पक्ष द्वारा कथित रूप से दुकान में जबरन ताला लगाकर खाद्यान्न वितरण की कार्रवाई को बाधित किया गया, शिकायत में अपर कलेक्टर के 2 जुलाई 2026 के आदेश और हाईकोर्ट के 18 अगस्त 2026 के आदेश की अवहेलना का भी उल्लेख किया गया है,आवेदिका ने संबंधित लोगों के खिलाफ अपराध दर्ज करने, उचित मूल्य दुकान का ताला खुलवाने और ग्रामीणों को विधिवत खाद्यान्न वितरण सुनिश्चित कराने के संबंध में कार्रवाई की मांग की है, शिकायत के साथ हाईकोर्ट के 18 अगस्त के आदेश और अपर कलेक्टर के 2 जुलाई के आदेश की प्रतियां संलग्न किए जाने का भी उल्लेख दस्तावेज में है।

अब प्रशासन के सामने दोहरी चुनौती

माझगवां की राशन दुकान का विवाद अब केवल दुकान के आबंटन या प्रभार तक सीमित नहीं रह गया है,एक तरफ हाईकोर्ट का स्पष्ट निर्देश है कि अपर कलेक्टर के बहाली आदेश का पालन किया जाए,वहीं दूसरी ओर प्रभार मिलने के बाद दुकान पर कथित रूप से दोबारा ताला लगाए जाने की शिकायत प्रशासन के सामने पहुंच चुकी है,अब प्रशासन को यह स्पष्ट करना होगा कि 21 अगस्त को हैंडओवर की प्रक्रिया किस अधिकारी की मौजूदगी में हुई, उस समय दुकान की स्थिति क्या थी और 25 अगस्त को अतिरिक्त ताला किसने लगाया, इसके लिए मौके का पंचनामा,दुकान की स्थिति, उपलब्ध स्टॉक,संबंधित पक्षों के बयान और यदि उपलब्ध हो तो आसपास के सीसीटीवी फुटेज महत्वपूर्ण साक्ष्य हो सकते हैं।

ग्रामीणों को राशन मिलने पर भी पड़ सकता है असर...

मामले का सीधा असर माझगवां के राशन उपभोक्ताओं पर पड़ सकता है,उचित मूल्य दुकान का संचालन विवाद में फंसने से खाद्यान्न वितरण प्रभावित होने की आशंका रहती है, शिकायतकर्ता ने भी प्रशासन से ग्रामीणों को विधिवत खाद्यान्न वितरण सुनिश्चित कराने की मांग की है, ऐसे में प्रशासन के सामने सबसे पहली प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि दुकान के संचालन को लेकर विवाद का तत्काल समाधान किया जाए और पात्र हितग्राहियों को राशन मिलने में कोई बाधा न आए।

अब सवाल ताले से आगे बढ़कर आदेश के अनुपालन का माझगवां की उचित मूल्य दुकान का घटनाक्रम कई चरणों से गुजर चुका है...

आबंटन निरस्तीकरण,अपील,बहाली,हाईकोर्ट की शरण,हाईकोर्ट का आदेश,प्रशासन द्वारा हैंडओवर और फिर कथित रूप से दोबारा ताला,अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि यदि 21 अगस्त को प्रशासन ने हाईकोर्ट के आदेश के अनुपालन में दुकान का प्रभार सौंप दिया था, तो 25 अगस्त को पैदा हुई स्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है? क्या दुकान पर दोबारा ताला लगाने वाले व्यक्ति को ऐसा करने का कोई अधिकार या लिखित आदेश था? यदि नहीं,तो प्रशासन क्या कार्रवाई करेगा? और सबसे महत्वपूर्ण–क्या हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद दुकान का संचालन रोकने की कोशिश की गई? इन सवालों का जवाब अब संबंधित अधिकारियों की जांच से ही सामने आएगा।

हाईकोर्ट ने मेरिट पर नहीं दिया था फैसला...

यह भी स्पष्ट करना जरूरी है कि हाईकोर्ट ने 18 अगस्त के आदेश में मामले के मूल विवाद के गुण-दोष पर कोई अंतिम राय नहीं दी थी,अदालत ने संबंधित अधिकारियों को अपर कलेक्टर के 2 जुलाई के आदेश का पालन करते हुए बहाल उचित मूल्य दुकान का प्रभार याचिकाकर्ता को 10 दिनों के भीतर सौंपने का निर्देश दिया था,इसलिए वर्तमान विवाद में भी अंतिम निष्कर्ष जांच के बाद ही निकाला जाना चाहिए,शिकायत में लगाए गए आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अभी बाकी है,लेकिन इतना तय है कि अब मामला केवल'दुकान किसके नाम आबंटित है'का नहीं रह गया है,सवाल यह भी है कि प्रशासनिक और न्यायिक आदेश के बाद जमीन पर उसका पालन कैसे हो रहा है,माझगवां के ग्रामीणों को अब इस विवाद का समाधान और नियमित राशन वितरण चाहिए,जबकि प्रशासन के सामने यह चुनौती है कि शिकायत में लगाए गए आरोपों की निष्पक्ष जांच कर वास्तविक स्थिति सामने लाए और यदि किसी ने वैध आदेश के विपरीत दुकान संचालन बाधित किया है तो नियमानुसार कार्रवाई करे।

कोरबा में बड़ा सड़क हादसा...3 की मौत,तेज रफ्तार स्कॉर्पियो का कहर

कोरबा,26 अगस्त 2026। तेज रफ्तार स्कॉर्पियो के चालक ने बाइक को अपनी चपेट में ले लिया। जिससे बाइक सवार पिता-पुत्र सहित 3 लोगों की मौत हो गई है। दुर्घटना के बाद स्कार्पियो का चालक मौके से फरार हो गया है। पुलिस ने चालक के खिलाफ अपराध पंजीबद्ध कर मामले की जांच शुरू कर दी है। हरदीबाजार थानान्तर्गत ग्राम सरईसिंगार निवासी फूल सिंह 58 वर्ष पिता दौलत सिंह, नरसिंह सिंह 24 वर्ष पिता फूल सिंह और यशवंत सिंह पिता स्वर्गीय कमल सिंह बाइक. क्रमांक सीडी 12 बीजे 5644 पर सवार होकर ग्राम सराइसिंगार से गेवरा की ओर जा रहे थे। इसी दौरान दोपहर करीब 3 बजे कुसमुंडा थाना क्षेत्रांतर्गत ग्राम खोडरी मोड़ के पास पहुंचे थे कि विपरीत दिशा से आ रही तेज रफ्तार स्कॉर्पियो क्रमांक सीजी 12 बीयू 2420 के चालक ने तेजी व लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाते हुए बाइक को टक्कर मार दी। जिससे फूल सिंह और नरसिंह सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। यशवंत सिंह गंभीर रूप से घायल है, जिसे डायल-112 की मदद से मेडिकल हॉस्पिटल पहुंचाया गया। जहां उपचार के उपरांत यशवंत की भी मौत हो गयी। बताया जाता है कि यशवंत भी उनका रिश्तेदार है। सड़क हादसे में पिता पुत्र सहित 3 लोगों की मौत हो जाने से गांव में शोक व्याप्त है। सर्वमंगला चौकी क्षेत्र में मंगलवार की शाम सर्वमंगला कनवेरी मार्ग के जोड़ा पुल के पास आमने सामने दो बाइक में जोरदार भिड़ंत हो गई। एक बाइक में तीन लोग सवार थे जबकि दूसरी बाइक में दो लोग सवार थे।

दोनों बाइक के भिड़ंत होने से सभी लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी तो पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और सभी घायलों को उपचार के लिए मेडिकल हास्पिटल में दाखिल कराया गया है। जिसमें से दो लोगों की मौत हो गई। बताया जाता है कि मृतकों में खम्हरिया लुतरा निवासी देवी प्रसाद निषाद और खिसोरा निवासी कोमल के रूप में की गई है। हादसा कैसे हुआ है यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। जबकि घायलों की पहचान नहीं हो पायी है। सभी घायलों का उपचार मेडिकल हॉस्पिटल में चल रहा है।

पटना की जर्जर सड़क पर फूटा जनआक्रोश,7 दिन में मरम्मत नहीं हुई तो चक्काजाम की चेतावनी

पुराना एनएच मार्ग गड्ढों में तब्दील,राहगीरों और स्कूली बच्चों की बढ़ी परेशानी;कांग्रेस कमेटी ने PWD से तत्काल मरम्मत की मांग की

-संवाददाता-

पटना/कोरिया,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)।

नगर पंचायत पटना क्षेत्र का प्रमुख पुराना एनएच मार्ग,इकडिपारा चौक से थाना एवं बस स्टैंड होते हुए नीलकंठ होटल के सामने बाइपास तक,इन दिनों बदहाल स्थिति में है। सड़क पर जगह-जगह गड्ढे हो जाने और बारिश में उनमें पानी भरने से राहगीरों और वाहन चालकों को परेशानी हो रही है। पत्र में विशेष रूप से स्कूली छात्र-छात्राओं के आवागमन को लेकर भी चिंता जताई गई है।

मामले को लेकर नगर कांग्रेस कमेटी पटना के अध्यक्ष परेश कुमार सिंह ने लोक निर्माण विभाग (लोक निर्माण विभाग), बैकुंठपुर को पत्र देकर सड़क की तत्काल मरम्मत और पैचवर्क की मांग की है, पत्र में सड़क को अत्यंत जर्जर और दुर्घटनाजन्य स्थिति में बताते हुए कहा गया है कि दोपहिया वाहन चालक गिरकर चोटिल हो रहे हैं तथा बारिश के दौरान गड्ढों में पानी भरने से दुर्घटना का खतरा और बढ़ जाता है।

10 जुलाई को नगर पंचायत ने किया था पत्राचार-शिकायत पत्र में उल्लेख है कि नगर पंचायत कार्यालय की ओर से इस मार्ग के तत्काल संधारण, मरम्मत/पैचवर्क तथा लोक निर्माण विभाग को हस्तांतरण के लिए 10 जुलाई 2026 को पत्राचार किया गया था,इसके बावजूद शिकायतकर्ता के अनुसार जमीनी स्तर पर मरम्मत का काम शुरू नहीं हुआ,इससे प्रशासनिक स्तर पर कार्रवाई में देरी को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं।

सात दिन का अल्टीमेटम,आंदोलन की चेतावनी-परेश कुमार सिंह ने लोक निर्माण विभाग से मांग की है कि सड़क की मरम्मत का कार्य सात दिनों के भीतर शुरू कराया जाए,पत्र में कहा गया है कि यदि निर्धारित अवधि में काम शुरू नहीं हुआ तो नगर पंचायत पटना की जनता,व्यापारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर चक्काजाम, धरना-प्रदर्शन और जनआंदोलन किया जाएगा, पत्र में प्रस्तावित आंदोलन से उत्पन्न प्रशासनिक एवं कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी शासन और संबंधित विभाग की होने की बात भी कही गई है।

सड़क किसके जिमे, यह भी बड़ा सवाल...

मामले में एक महत्वपूर्ण प्रश्न सड़क के रखरखाव की जिम्मेदारी को लेकर भी है, जब नगर पंचायत ने संधारण और लोक निर्माण विभाग को हस्तांतरण के लिए पत्राचार किया है,तो संबंधित विभागों को स्पष्ट करना चाहिए कि फिलहाल सड़क की मरम्मत की जिम्मेदारी किसकी है,यदि हस्तांतरण की प्रक्रिया लंबित है तो तब तक तत्काल पैचवर्क कौन कराएगा? स्थानीय लोगों के लिए विभागीय प्रक्रिया से अधिक महत्वपूर्ण सड़क की सुरक्षा है,खासकर बारिश के दौरान पानी से भरे गड्ढों के कारण दोपहिया चालकों और स्कूली बच्चों के लिए जोखिम बढ़ने की शिकायत की गई है,ऐसे में प्रशासन को सड़क का स्थल निरीक्षण कर प्राथमिकता के आधार पर आवश्यक कार्रवाई करनी चाहिए।

अब लोक निर्माण विभाग की कार्रवाई पर नजर...

पुराना एनएच मार्ग स्थानीय आवागमन का महत्वपूर्ण रास्ता है, इसकी जर्जर स्थिति को लेकर लिखित शिकायत अब लोक निर्माण विभाग तक पहुंच चुकी है और सात दिन में मरम्मत शुरू करने की मांग रखी गई है, इसके साथ आंदोलन की चेतावनी ने प्रशासन के सामने भी तत्काल कार्रवाई की जरूरत पैदा कर दी है,अब देखना होगा कि लोक निर्माण विभाग सड़क की वास्तविक स्थिति का निरीक्षण कर कब तक मरम्मत शुरू कराता है और नगर पंचायत-लोक निर्माण विभाग के बीच हस्तांतरण की स्थिति को कब स्पष्ट किया जाता है,पटना की जनता का सवाल यही है कि जब सड़क की बदहाली की लिखित शिकायत सामने आ चुकी है और दुर्घटना का खतरा बताया जा रहा है,तो सुरक्षित आवागमन के लिए मरम्मत का काम आखिर कब शुरू होगा?

पात्र हितग्राही वंचित,करीबी को शौचालय योजना का लाभ! शाहनाज परवीन की भूमिका पर उठे सवाल

शौचालय योजना पर सवाल,पुराने शौचालयों पर दोबारा लाभ का आरोप,200 पात्रों की अनदेखी...

पति पीएमएवाई ऑपरेटर,पत्नी स्वच्छ भारत मिशन की समन्वयक, योजनाओं में लाभ वितरण पर सवाल

कागजों में लाभ,ज़मीन पर कितने शौचालय? शाहनाज परवीन की भूमिका जांच के घेरे में...

शौचालय योजना की सूची ने खोली पोल? करीबी को लाभ,पात्र हितग्राही इंतजार में...

स्वच्छ भारत मिशन की व्यक्तिगत शौचालय योजना में लाभ वितरण पर सवाल, पति-पत्नी की भूमिका की निष्पक्ष जांच की मांग,दस्तावेजों में 12 हजार की भुगतान प्रविष्टि

-रवि सिंह-

कोरिया,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)। स्वच्छ भारत मिशन और प्रधानमंत्री आवास योजना से जुड़े कार्यों में कथित अनियमितताओं को लेकर जिला प्रशासन के समक्ष पहुंची शिकायतों ने अब हितग्राही चयन,योजना की राशि जारी करने और शौचालय निर्माण के सत्यापन पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं, शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि जिला समन्वयक स्वच्छ भारत अभियान शहनाज परवीन और पीएमएवाई ऑपरेटर उनके पति मोहम्मद आसिफ की भूमिका की निष्पक्ष जांच की जानी चाहिए। शिकायत में सबसे गंभीर आरोप व्यक्तिगत शौचालय योजना को लेकर है,आरोप है कि ऐसे अनेक लोग, जो वास्तव में योजना के पात्र थे,उन्हें लाभ नहीं मिला, जबकि पहले से शौचालय बनवा चुके अथवा कथित रूप से करीबी लोगों के नाम पर दोबारा लाभ स्वीकृत किए गए, शिकायतकर्ता का दावा है कि करीब 200 पात्र हितग्राही लाभ से वंचित हैं, इसी शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि शहनाज परवीन के ड्राइवर को शौचालय योजना का लाभ मिला,हालांकि उपलब्ध सरकारी लाभार्थी सूची में कथित नाम की एक प्रविष्टि अवश्य दिखाई देती है,लेकिन उपलब्ध दस्तावेज यह प्रमाणित नहीं करता कि उक्त व्यक्ति शहनाज परवीन का ड्राइवर है,इसलिए ड्राइवर होने का दावा फिलहाल शिकायत का आरोप है,जिसकी स्वतंत्र जांच जरूरी है।

सवाल यह नहीं कि सूची में नाम हैं,सवाल यह कि पात्र कौन था?

व्यक्तिगत शौचालय योजना का उद्देश्य जरूरतमंद परिवारों को शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि उपलब्ध कराना है,ऐसे में शिकायत का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि क्या वास्तविक पात्र परिवारों को योजना से बाहर कर दिया गया और पहले से लाभ प्राप्त कर चुके लोगों को दोबारा लाभ मिला? शिकायतकर्ता का आरोप है कि क्षेत्र में ऐसे लोग मौजूद हैं जिनके घर में पहले ही शौचालय बन चुका था, लेकिन इसके बावजूद उनके नाम पर दोबारा योजना का लाभ पहुंचाया गया,वहीं जिन परिवारों के घर में शौचालय नहीं है, वे अब भी योजना के लाभ का इंतजार कर रहे हैं,यदि यह आरोप सही है तो इसकी पुष्टि के लिए केवल सरकारी सूची देखना पर्याप्त नहीं होगा,प्रत्येक लाभार्थी के घर जाकर यह देखना होगा कि घर में शौचालय पहले से बना था या नहीं? शौचालय किस वर्ष और किस योजना से बना? क्या उसी परिवार को पहले भी प्रोत्साहन राशि मिली? वर्ष 2026-27 में उसके नाम पर दोबारा भुगतान क्यों हुआ? लाभार्थी का चयन किस स्तर पर हुआ? शौचालय निर्माण की फोटो और जियो-टैगिंग उपलब्ध है या नहीं? राशि किस खाते में भेजी गई? इन सवालों के जवाब ही वास्तविक स्थिति सामने ला सकते हैं।

दस्तावेज में 12 हजार की प्रविष्टि, प्रशासनिक स्वीकृति भी दर्ज-उपलब्ध लाभार्थी सूची में अलग-अलग पंचायतों के हितग्राहियों के नाम,पिता/पति का नाम, प्रोत्साहन राशि और प्रशासनिक स्वीकृति क्रमांक दर्ज हैं,इसी सूची में क्रमांक 194 पर 'शाहेनापरवीन - मो इरशाद' नाम दर्ज है,उसके सामने 12,000 की राशि और प्रशासनिक स्वीकृति क्रमांक 5063 दिनांक 01-07-2026 अंकित है,यही प्रविष्टि अब शिकायत में लगाए गए आरोपों के संदर्भ में जांच का महत्वपूर्ण बिंदु बन सकती है,प्रशासन को यह देखना होगा कि संबंधित लाभार्थी कौन है, उसकी पात्रता क्या थी,उसके घर में शौचालय की वास्तविक स्थिति क्या थी और भुगतान किस आधार पर स्वीकृत किया गया,सिर्फ सूची में नाम दर्ज होना अनियमितता का प्रमाण नहीं है,लेकिन यदि शिकायतकर्ता द्वारा लगाए गए आरोपों के साथ इसे जोड़कर देखा जाए तो संबंधित लाभार्थी की पहचान और पात्रता का भौतिक सत्यापन जरूरी हो जाता है।

लाभार्थी सूची में सैकड़ों नाम, पंचायतवार जांच की मांग...

उपलब्ध दस्तावेज में केवल एक-दो नहीं, बल्कि बड़ी संख्या में पंचायतों के हितग्राहियों के नाम दर्ज हैं,उदाहरण के तौर पर गिरजापुर पंचायत की सूची में क्रमांक 419 से 442 तक कई हितग्राहियों के नाम दर्ज हैं और प्रत्येक के सामने ?12,000 की राशि तथा प्रशासनिक स्वीकृति क्रमांक दिया गया है,इसी प्रकार अन्य पंचायतों के नाम भी सूची में लगातार दर्ज हैं, इसका अर्थ यह है कि यदि शिकायत की जांच होती है तो मामला किसी एक नाम तक सीमित नहीं रहना चाहिए,पूरी सूची का पंचायतवार भौतिक सत्यापन कराया जाना चाहिए, खासकर उन हितग्राहियों की अलग सूची तैयार की जा सकती है जिनके नाम पर वर्ष 2026 में भुगतान हुआ है और फिर यह देखा जा सकता है कि उनके घर में वास्तविक शौचालय मौजूद है या नहीं।

2020 की पटना पंचायत की फाइल भी सामने-मामले में उपलब्ध एक अन्य दस्तावेज में ग्राम पंचायत पटना में दिव्यांग व्यक्तियों के व्यक्तिगत शौचालय निर्माण का उल्लेख है, इसमें कार्यालय जिला पंचायत कोरिया के प्रशासनिक स्वीकृति आदेश क्रमांक 3029 दिनांक 05.08.2020 का संदर्भ दिया गया है,पत्र के अनुसार ग्राम पंचायत पटना में 26 दिव्यांग व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण के लिए राशि स्वीकृत की गई थी। दस्तावेज में कहा गया है कि पंचायत को 7,15,894 प्राप्त हो चुके थे तथा चार दिव्यांग व्यक्तिगत शौचालयों का कार्य पूर्ण होना शेष बताया गया था,पत्र में यह भी उल्लेख है कि ग्राम पंचायत पटना नगर पंचायत में परिवर्तित हो जाने के कारण राशि प्राप्त नहीं होने से सामग्री प्रदाता को भुगतान नहीं किया जा सका,यह पत्र तत्कालीन स्थिति से जुड़ा है और अपने आप में किसी घोटाले की पुष्टि नहीं करता, लेकिन वर्तमान शिकायत के संदर्भ में पुराने और नए लाभार्थी रिकॉर्ड का मिलान महत्वपूर्ण हो सकता है।

पीएमएवाई में भी अनियमितता और दलालों के माध्यम से लाभ पहुंचाने का आरोप...

शिकायत का दायरा केवल शौचालय योजना तक सीमित नहीं है, वित्तीय वर्ष 2026-27 में पीएमएवाई योजना में भी अनियमितता और दलालों के माध्यम से हितग्राहियों को लाभ पहुंचाने के आरोप लगाए गए हैं,शिकायतकर्ता का कहना है कि बड़ी संख्या में पात्र लोगों के आवेदन दर्ज होने के बाद भी वे लाभ पाने से वंचित हैं। आरोप है कि कथित रूप से पत्नी की आईडी का उपयोग कर लोगों की प्रविष्टियां की गई और अपात्र लोगों को लाभ पहुंचाने की स्थिति बनी, इन आरोपों की पुष्टि के लिए संबंधित लॉगिन आईडी,हितग्राही प्रविष्टियां,पात्रता सूची,स्वीकृति आदेश, भुगतान विवरण और डिजिटल रिकॉर्ड की जांच महत्वपूर्ण होगी,यदि किसी व्यक्ति की आईडी का उपयोग उसकी जानकारी या अधिकार के विपरीत किया गया है तो डिजिटल लॉग और सिस्टम रिकॉर्ड से इसकी स्थिति स्पष्ट हो सकती है।

कमीशनखोरी के भी लगाए गए गंभीर आरोप...

शिकायत में सरपंच, सचिव और छोटे वेंडरों से कथित रूप से कमीशन मांगने का आरोप भी लगाया गया है,शिकायतकर्ता का आरोप है कि जैसे ही किसी सरपंच,सचिव या वेंडर के खाते में योजना की राशि जारी होती है,कथित रूप से फोन कर कमीशन की मांग की जाती है,राशि नहीं देने पर परेशान करने और काम में अड़चन डालने का आरोप भी लगाया गया है,ये आरोप फिलहाल शिकायत में लगाए गए हैं। यदि प्रशासन इनकी जांच करना चाहता है तो संबंधित लोगों के बयान, कॉल संबंधी उपलब्ध साक्ष्य,भुगतान की तारीख, राशि जारी होने के बाद संपर्क की स्थिति तथा अन्य दस्तावेजों की जांच की जा सकती है।

कार्यालय सामग्री बेचने का आरोप, स्टॉक रजिस्टर से खुल सकता है सच-शिकायत में फरवरी 2026 में कार्यालय के लिए खरीदे गए प्रिंटर और अन्य सामग्री को कथित रूप से बेच दिए जाने का आरोप भी लगाया गया है, शिकायतकर्ता ने इसके लिए स्टॉक एंट्री की जांच की मांग की है,यदि सरकारी सामग्री वास्तव में खरीदी गई थी तो उसका खरीद बिल,भुगतान वाउचर, स्टॉक रजिस्टर,उपयोग की स्थिति और वर्तमान भौतिक उपलब्धता रिकॉर्ड से जांची जा सकती है,इस आरोप में भी दस्तावेजी जांच महत्वपूर्ण है, क्योंकि केवल शिकायत के आधार पर किसी व्यक्ति को दोषी नहीं माना जा सकता।

नियुक्ति प्रक्रिया पर भी सवाल-उपलब्ध शिकायत में आसिफ मोहम्मद की नियुक्ति प्रक्रिया को लेकर भी कई सवाल उठाए गए हैं,शिकायतकर्ता ने उनके निवास प्रमाण-पत्र,पुलिस/चरित्र सत्यापन और नियुक्ति के समय प्रस्तुत दस्तावेजों की जांच की मांग की है,शिकायत में सात बिंदुओं में जांच की मांग की गई है। इनमें यह पता लगाने की मांग की गई है कि नियुक्ति किस पद पर और किस आदेश के तहत हुई, पद के लिए निर्धारित पात्रता एवं चयन प्रक्रिया क्या थी, नियुक्ति के समय कौन-कौन से दस्तावेज प्रस्तुत किए गए और निवास प्रमाण-पत्र का सत्यापन किस अधिकारी अथवा कार्यालय ने किया,साथ ही पुलिस/चरित्र सत्यापन कराया गया था या नहीं तथा चयन/नियुक्ति में किस अधिकारी ने अनुशंसा और अनुमोदन किया, इसकी भी जांच की मांग की गई है।

महिला कर्मचारियों को प्रताड़ित करने का आरोप-शिकायत में शहनाज परवीन पर पूर्व में तीन महिला कर्मचारियों को कथित रूप से प्रताड़ित करने का आरोप भी लगाया गया है, शिकायतकर्ता का दावा है कि या तो उन्हें नौकरी से हटाया गया या नौकरी छोड़ने के लिए मजबूर किया गया,यह आरोप भी दस्तावेजी और विभागीय जांच का विषय है,संबंधित कर्मचारियों के बयान,उनके सेवा रिकॉर्ड, स्थानांतरण/हटाने के आदेश तथा शिकायतों की पुरानी फाइलों से स्थिति स्पष्ट की जा सकती है।

समुदाय विशेष को लाभ देने के आरोप पर भी जांच जरूरी-शिकायत में कुछ छोटे कर्मचारियों को परेशान करने तथा प्लंबर, चौकीदार, इलेक्ट्रिशियन सहित अन्य कामों में कथित रूप से परिचित लोगों को प्राथमिकता देने का आरोप लगाया गया है,यह आरोप संवेदनशील प्रकृति का है। इसलिए बिना प्रमाण किसी समुदाय या व्यक्ति के खिलाफ निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा,यदि इसकी जांच की जाती है तो पिछले कुछ वर्षों के कार्यादेश, भुगतान रिकॉर्ड,वेंडर सूची और काम आवंटित करने की प्रक्रिया का रिकॉर्ड निकालकर निष्पक्ष तुलना की जा सकती है।

जांच हुई तो सामने आएगा असली लाभार्थी और असली खेल-पूरे मामले में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उपलब्ध दस्तावेज आरोपों की जांच की आवश्यकता जरूर दिखाते हैं,लेकिन किसी व्यक्ति को दोषी साबित नहीं करते,शौचालय योजना में यदि शिकायतकर्ता के दावे के अनुसार करीब 200 पात्र परिवार वास्तव में लाभ से वंचित हैं और दूसरी ओर ऐसे लोगों को राशि दी गई है जिनके घर में पहले से शौचालय मौजूद था,तो यह योजना की निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल होगा, वहीं यदि जांच में सभी लाभार्थी पात्र पाए जाते हैं और भुगतान नियमों के अनुसार हुआ है तो शिकायत में लगाए गए आरोपों का तथ्यात्मक निराकरण भी उतना ही आवश्यक होगा,इसलिए जिला प्रशासन को चाहिए कि जांच को केवल कागजों तक सीमित न रखकर पंचायतवार और हितग्राहीवार भौतिक सत्यापन कराए।

जांच के लिए सात बड़े बिंदु...

1. वर्ष 2026-27 के सभी शौचालय हितग्राहियों का भौतिक सत्यापन।
2. पुराने ओडीएफ रिकॉर्ड और नई लाभार्थी सूची का मिलान।
3. प्रत्येक लाभार्थी के बैंक खाते में भुगतान की जांच।
4. शौचालय की फोटो,जियो-टैगिंग और निर्माण की तारीख का सत्यापन।
5. पीएमएवाई और स्वच्छ भारत मिशन की संबंधित आईडी/लॉगिन का परीक्षण।
6. कमीशन मांगने के आरोपों पर सरपंच, सचिव, वेंडर और हितग्राहियों के बयान।
7. शहनाज परवीन और मोहम्मद आसिफ से जुड़े सभी आरोपों की मूल दस्तावेजों के आधार पर स्वतंत्र जांच।

फिलहाल सवाल यही है...

कागजों में जिन हितग्राहियों के नाम पर 12 हजार की राशि स्वीकृत है,क्या उनके घरों में वास्तव में शौचालय बने हैं? और जिन करीब 200 लोगों को पात्र होने के बावजूद लाभ नहीं मिला बताया जा रहा है,उनकी फाइलें आखिर किस स्तर पर अटकीं? अगर जिला प्रशासन इन सवालों का पंचायतवार जवाब तलाश लेता है,तो शौचालय योजना में लाभार्थी चयन और भुगतान की पूरी तस्वीर सामने आ सकती है।

सौर्य तिवारी का CIMS बिलासपुर में MBBS के लिए चयन,महोरा में तिवारी परिवार में हर्ष

मेहनत,लगन और प्रतिभा के बल पर हासिल की सफलता,परिवार एवं क्षेत्र का बढ़ाया गौरव

-संवाददाता-

कोरिया/पटना,26 अगस्त 2026 (घटती-घटना)। सौर्य तिवारी का चयन सीआईएमएस बिलासपुर में एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए होने पर महोरा के तिवारी परिवार सहित समाज एवं क्षेत्र में हर्ष का माहौल है,सौर्य की इस उपलब्धि को परिवार के साथ-साथ पूरे क्षेत्र के लिए गौरव का विषय माना जा रहा है।

सौर्य तिवारी ने अपनी कड़ी मेहनत, लगन,प्रतिभा और दृढ़ संकल्प के बल पर यह सफलता हासिल की है, चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश पाने की उनकी उपलब्धि ने परिवारजनों और शुभचिंतकों को गौरवान्वित किया है,उनके चयन से तिवारी परिवार, महोरा सहित क्षेत्र का नाम भी रोशन हुआ है, सौर्य की सफलता के पीछे उनकी निरंतर मेहनत और लक्ष्य के प्रति समर्पण को महत्वपूर्ण माना जा रहा है,एमबीबीएस जैसे प्रतिष्ठित चिकित्सा पाठ्यक्रम में चयन उनके शैक्षणिक परिश्रम और प्रतिभा का परिणाम है,इस उपलब्धि से परिवार में खुशी का माहौल है और शुभचिंतकों द्वारा लगातार बधाइयां दी जा रही हैं,परिवारजनों एवं शुभचिंतकों ने सौर्य तिवारी को इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी हैं, उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सौर्य भविष्य में एक कुशल,संवेदनशील और सेवाभावी चिकित्सक बनकर समाज की सेवा करेंगे तथा अपने परिवार और क्षेत्र का गौरव आगे भी बढ़ाते रहेंगे,तिवारी परिवार के शुभचिंतकों ने कहा कि सौर्य की सफलता क्षेत्र के अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायी है,निरंतर मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ लक्ष्य हासिल किया जा सकता है,इसका उदाहरण सौर्य ने अपनी उपलब्धि के माध्यम से प्रस्तुत किया है,तिवारी जमींदार परिवार,महोरा ने भी सौर्य तिवारी को एमबीबीएस में चयन पर शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उनके आगामी चिकित्सकीय जीवन के लिए मंगलकामना की है,परिवार ने उनके सफल और गौरवमयी भविष्य की कामना की है।

यश का मैग्नेटिक अवतार,मजबूत महिला किरदारों से सजी है टॉक्सिक

गीतू मोहनदास निर्देशित टॉक्सिक में यश का स्टारडम और एक्शन शानदार है। बेहतरीन विजुअल्स के बावजूद, 194 मिनट लंबी फिल्म कमजोर स्क्रीनप्ले और ओवरलोड कहानी के कारण पूरी तरह प्रभावित करने से चूक जाती है।

लंबा इंतजार,भारी भरकम बजट,पैन-इंडिया स्टार यश की बड़ी स्क्रीन पर वापसी और लीक से हटकर सिनेमा बनाने वाली निर्देशक गीतू मोहनदास की जुगलबंदी फिल्म टॉक्सिक : ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स को लेकर दर्शकों और क्रिटिक्स के बीच जबरदस्त माहौल बना हुआ था। 1940 के दशक के बैकड्रॉप पर बनी यह बॉलीवु फिल्म अपनी घोषणा के बाद से ही लगातार चर्चा में रही। गीतू मोहनदास की यह एक्शन-ड्रामा फिल्म एक साथ गैंगस्टर ड्रामा,फैमिली इमोशंस, साइकोलॉजिकल थ्रिलर और विजुअल स्पेक्टेकल बनने की कोशिश करती है। 194 मिनट की यह फिल्म कुछ जगहों पर बेहद शानदार और प्रभावी है,लेकिन कई मोर्चों पर अपनी ही कहानी की गति के आगे हावी और उलझी हुई नजर आती है। पूरा रिव्यू जानने के लिए नीचे स्क्रोल करें।

फिल्म की कहानी

फिल्म की कहानी 1940 के दशक के गोवा के अंडरवर्ल्ड और आपराधिक साम्राज्य के इर्द-गिर्द बुनी गई है। कहानी के केंद्र में है राया (यश),एक ऐसा निर्दयी गैंगस्टर जिसकी जिंदगी हिंसा, असीमित महत्वाकांक्षा और पेचीदा रिश्तों के ताने-बाने से घिरी हुई है। राया के जीवन में उसकी बड़ी बहन गंगा (नयनतारा) एक मजबूत और महत्वपूर्ण स्तंभ की तरह खड़ी है। राया के इर्द-गिर्द कई महिलाएं मौजूद हैं नाडिया (कियारा आडवाणी),रेबेका (तारा सुतारिया),मेलिसा (रुक्मिणी वसंत) और एलिजाबेथ (हुमा कुरैशी)। ये सभी किरदार अलग-अलग परिस्थितियों में राया की जिंदगी से जुड़े हुए हैं।

कहानी में सबसे बड़ा मोड़ तब आता है जब फिल्म में टिकट नाम के एक अन्य किरदार का प्रवेश होता है,जिसे खुद यश ने ही निभाया है। फिल्म के सेकंड हाफ में राया और टिकट के बीच का कनेक्शन और टकराव कहानी का सबसे अहम पहलू बन जाता है। कागजों पर देखा जाए तो कहानी में काफी गहराई और नयापन है। राया सिर्फ ताकत और सत्ता के पीछे भागने वाला पारंपरिक गैंगस्टर नहीं है; फिल्म उसके भावनात्मक फैसलों, उसके आंतरिक विरोधाभासों और उसके आस-पास के उन लोगों को भी तलाशने की कोशिश करती है जो या तो उसे बढ़ावा देते हैं या उसे चुनौती देते हैं।

लेखन और निर्देशन

निर्देशक गीतू मोहनदास ने यह साफ कर दिया है कि वे एक साधारण या घिसी-पिटी गैंगस्टर फिल्म नहीं बनाना चाहती थीं। यही टॉक्सिक की सबसे बड़ी खासियत भी है और इसकी कमजोरी भी। फिल्म में एक मास एंटरटेनर के सभी तत्व मौजूद हैं,एक शक्तिशाली मुख्य किरदार,खौफनाक हिंसा,बैकग्राउंड म्यूजिक,एंट्री सीन्स और हैरतअंगेज एक्शन सीक्वेंस। लेकिन गीतू ने इन सभी तत्वों को एक काल्पनिक और अनोखी दुनिया में स्थापित करने का प्रयास किया है।

स्क्रीन पर राया के कैरेक्टर को जिस तरह से पेश किया गया है, उसमें केजीएफके रॉकी भाई की झलक महसूस होती है। रॉकी की तरह राया भी एक आम हीरो के बजाय लार्जर देन लाइफ व्यक्तित्व है,जिसकी साख और खौफ उसके आने से पहले ही माहौल बना देता है। लेकिन दोनों में बड़ा अंतर यह है कि गीतू मोहनदास राया के चरित्र की जटिलताओं और उसकी कमियों को दिखाने में ज्यादा दिलचस्पी रखती हैं।

फिल्म की समस्या विचारों की कमी नहीं है,बल्कि ओवरलोड है। 194 मिनट का लंबा रनटाइम मिलने के बावजूद स्क्रीनप्ले बहुत जल्दबाजी में लिखा गया महसूस होता है। महत्वपूर्ण भावनात्मक सीन बनने से पहले ही खत्म हो जाते हैं,जिससे दर्शक उनसे पूरी तरह जुड़ नहीं पाते। कई दृश्य केवल कहानी को अगले बड़े एक्शन सीक्वेंस तक ले जाने के लिए रखे गए प्रतीत होते हैं। हालांकि गीतू का निर्देशन उन दृश्यों में सबसे ज्यादा चमकता है जहाँ वे किरदारों को शांति से संवाद करने का मौका देती हैं। खासतौर पर राया और टिकट के बीच के सीन्स में जो मनोवैज्ञानिक तनाव देखने को मिलता है, उसकी जरूरत पूरी फिल्म में महसूस होती है।

विजुअल ग्रैंडियोर और बेहतरीन एक्शन

यदि कोई एक डिपार्टमेंट है जिसमें टॉक्सिक पूरी तरह से अपनी छाप छोड़ती है तो वह है इसका तकनीकी पहलू। 1940 के गोवा के दौर को बड़े पर्दे पर री-क्रिएट करने के लिए मेकर्स ने काफी मेहनत की है। फिल्म के सेट,कॉस्ट्यूम डिजाइन और ओवरऑल प्रोडक्शन वैल्यू एक ऐसी दुनिया का निर्माण करते हैं जो वास्तविकता से बड़ी और भव्य लगती है।

सिनेमैटोग्राफर राजीव रवि की सिनेमैटोग्राफी फिल्म को एक अलग और विशिष्ट विजुअल लैंग्वेज देती है। कैमरे के फ्रेम में हर एक डिटेल को बेहद खूबसूरती से कैद किया गया है,बिना मुख्य किरदारों से ध्यान हटाए। फिल्म के मेकिंग स्टाइल पर अंतर्राष्ट्रीय सिनेमा और दुनिया भर की प्रदर्शन कलाओं का साफ प्रभाव दिखाई देता है और मेकर्स इन प्रभावों को अपनी कहानी का हिस्सा बनाने में काफी हद तक सफल रहे हैं।

फिल्म का एक्शन डिपार्टमेंट इसकी सबसे बड़ी ताकतों में से एक है। सर्कस के बैकड्रॉप में नाडिया के इर्द-गिर्द फिल्माया गया एम्बुश एक्शन सीक्वेंस बेहद यादगार बन पड़ा है। यह सीन काफी थियेट्रिकल है,लेकिन कहीं भी अपनी पकड़ नहीं खोता। सर्कस के अलग माहौल ने एक्शन कोरियोग्राफी को एक नया और अनूठा एंगल दिया है। इसके अलावा साउंड डिजाइन और म्यूजिक का इस्तेमाल राया के ऑन-स्क्रीन प्रेजेंस को कई गुना बढ़ाने के लिए किया गया है।

यश का करिश्मा और सहयोगी कलाकारों का काम

चार साल के लंबे अंतराल के बाद बड़े पर्दे पर वापसी कर रहे यश वही करते हैं जो इस तरह की फिल्मों में एक मुख्य स्टार को करना चाहिए, वे हर एंट्री को धमाकेदार बना देते हैं। राया के रूप में यश बिना ज्यादा प्रयास किए भी स्क्रीन पर अपना दबदबा बनाए रखते हैं। उनका स्वैग प्राकृतिक लगता है, लेकिन साथ ही वे अपने किरदार में एक डार्क और भयानक शेड भी लाते हैं। राया एक ऐसा किरदार नहीं है जिसे आसानी से पसंद किया जा सके, और फिल्म भी दर्शकों से उसे हीरो मानने की उम्मीद नहीं करती। यश का अभिनय इसलिए प्रभावी लगता है क्योंकि वे समझते हैं कि उनके किरदार का असली आकर्षण उसके अनपेक्षित व्यवहार में छुपा है।डबल रोल ने यश को अपनी अभिनय क्षमता दिखाने का एक नया मौका दिया है। राया और टिकट के एक साथ वाले सीन पूरी फिल्म के सबसे दिलचस्प हिस्सों में से हैं,क्योंकि यश को एक ही समय में दो बिल्कुल अलग स्वभाव वाले किरदारों के बीच का समीकरण और तनाव स्थापित करना पड़ा है। अन्य कलाकारों की बात करें तो नयनतारा ने गंगा के रूप में एक शांत लेकिन प्रभावशाली परफॉर्मेंस दी है। उनके अभिनय में गंभीरता और अधिकार झलकता है,हालांकि कमजोर राइटिंग की वजह से उनके किरदार को कोई बहुत बड़ा आर्क नहीं मिल पाया। कियारा आडवाणी ने नाडिया के रूप में अपनी छाप छोड़ी है,जबकि रुक्मिणी वसंत ने अपने दृश्यों में एक अलग ऊर्जा लाई है। हुमा कुरैशी और तारा सुतारिया ने भी अपने काम के साथ पूरा न्याय किया है,भले ही स्क्रीनप्ले ने उनके किरदारों को उतना विस्तार न दिया हो जितना शुरुआत में वादा किया गया था। फिल्म की मुख्य समस्या यह है कि सभी रास्ते घूम-फिरकर राया पर ही आकर खत्म होते हैं, जिससे बाकी मजबूत किरदार साइडलाइन हो जाते हैं।

अनन्या पांडे की लव लाइफ में बदलाव
वॉकर ब्लैंको से अलग हुईं एक्ट्रेस

बॉलीवुड अभिनेत्री अनन्या पांडे और वॉकर ब्लैंको के रिश्ते को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक,दोनों ने करीब दो साल से ज्यादा समय तक डेटिंग करने के बाद अपने रास्ते अलग कर लिए हैं। बताया जा रहा है कि यह फैसला आपसी सहमति से लिया गया और दोनों के बीच कोई कड़वाहट नहीं है। अनन्या और वॉकर ने अपने रिश्ते को लंबे समय तक निजी रखा था। दोनों ने कभी आधिकारिक रूप से अपने रिलेशनशिप की पुष्टि नहीं की,लेकिन सोशल मीडिया पोस्ट और सार्वजनिक मौकों पर उनकी नजदीकियां अक्सर चर्चा में रहती थीं।

अनन्या ने लिया रिश्ता खत्म करने का फैसला

रिपोर्ट्स के अनुसार, अनन्या ने पिछले हफ्ते इस रिश्ते को खत्म करने का फैसला लिया। हालांकि,सूत्रों के मुताबिक यह अलगाव आपसी सहमति से हुआ और दोनों के बीच किसी तरह की नाराजगी नहीं है।

2024 में शुरू हुई थी डेटिंग की चर्चा

अनन्या पांडे और वॉकर ब्लैंको के रिश्ते की खबरें साल 2024 में सामने आई थीं। दोनों के बीच नजदीकियों की चर्चा अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन के दौरान शुरू हुई थी। इसके बाद दोनों कई मौकों पर साथ नजर आए।

सोशल मीडिया पर भी दिखी थी बॉन्डिंग

हालांकि दोनों ने अपने रिश्ते को सार्वजनिक नहीं किया था, लेकिन सोशल मीडिया पर उनकी बॉन्डिंग को लेकर फैंस लगातार चर्चा करते रहे। वॉकर ने अनन्या के जन्मदिन पर खास पोस्ट शेयर किया था, जिसके बाद दोनों के रिश्ते की खबरों को और हवा मिली थी।

निजी जिंदगी को हमेशा रखा प्राइवेट

अनन्या पांडे और वॉकर ब्लैंको ने अपने निजी रिश्ते को मीडिया की नजरों से दूर रखने की कोशिश की। दोनों ने अपने रिश्ते को लेकर ज्यादा बयान देने से हमेशा बचते रहे। फिलहाल दोनों की ओर से ब्रेकअप को लेकर कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

रवि किशन के साथ अनुपम खेर-बोमन ईरानी ने किया वायरल डांस

अनुपम खेर और बोमन ईरानी का एक वीडियो सामने आया है जिसमें वह रवि किशन के साथ उनके वायरल डांस पर थिरक रहे हैं।बोमन ईरानी और अनुपम खेर इन दिनों वायरल डांस का हिस्सा बनने का मौका नहीं गंवा रहे हैं। जेनजी प्रोटेस्ट के दौरान वायरल हुए एक रील्स पर डांस करने के बाद अब अनुपम और बोमन, रवि किशन के ट्रेंड में शामिल हो गए हैं। रवि किशन कुछ समय से मीम किंक बन गए हैं। स्टेटमेंट से लेकर डांस तक...रवि किशन के क्लिप्स इंटरनेट पर वायरल हो रहे हैं और लोग उन पर रील्स बना रहे हैं। अब इस ट्रेंड को खोसला का घोसला 2 की स्टार कास्ट ने भी फॉलो किया है।

रवि किशन संग अनुपम-बोमन ने बनाया वीडियो

अनुपम खेर ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है जिसमें वह, बोमन ईरानी और प्रवीन डबास, रवि किशन के साथ उनका वायरल डांस स्टेप करते हुए नजर आ रहे हैं। वीडियो में चक दे फट्टे पर चारों का डांस छा गया है और अब इंटरनेट पर ये क्लिप वायरल हो रहा है।

खोसला का घोसला 2 में हुई रवि किशन की एंट्री

वीडियो शेयर करते हुए अनुपम खेर ने रिवील किया है कि उनकी आगामी फिल्म खोसला का घोसला 2 में रवि किशन भी अहम भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कैप्शन में लिखा, एक बायां पैर है, एक दायां पैर है। ये है चल फुट। कोऑर्डिनेशन के किंग्स वापस आ गए हैं। हम खोसला का घोसला 2 की कास्ट में अपने भाई रवि किशन का स्वागत करते हैं।

फैंस को पसंद आ रहा है अनुपम खेर का वीडियो

अनुपम खेर का ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। सेलिब्रिटीज भी उनका वायरल डांस देखकर रिएक्शन दे रहे हैं। शिल्पा शेट्टी ने लिखा, धमाल मचा दिया। वहीं, फैंस उनके डांस को पसंद कर रहे हैं। एक ने कहा कि चारों ने गदर मचा दिया है। कुछ इसे क्यूट बता रहे हैं। आपको बता दें कि प्रशांत बघिया के निर्देशन में बनी कॉमेडी फिल्म खोसला का घोसला 2 सिनेमाघरों में 28 अगस्त को रिलीज हो रही है।

अजय देवगन का कूकू कोहली के निधन पर दुःख

बॉलीवुड सुपरस्टार अजय देवगन ने बुधवार को फिल्ममेकर कू कू कोहली के निधन पर शोक व्यक्त किया। कोहली ने ही अजय को उनकी पहली फिल्म फूल और कांटे से लॉन्च किया था। अजय देवगन ने अपने करियर की शुरुआत में उन पर भरोसा करने के लिए उन्हें याद किया। एक्टर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर फिल्ममेकर की एक तस्वीर और एक भावुक नोट शेयर किया। उन्होंने लिखा, कुछ लोग आपकी ज़िंदगी की दिशा हमेशा के लिए बदल देते हैं। कू कू जी मेरे लिए उन्हीं लोगों में से एक थे। मुझ पर भरोसा करने के लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूंगा। कू कू जी, आपकी बहुत याद आएगी। ओम शांति। जानकारी के लिए बता दें कि कू कू कोहली का मंगलवार को मुंबई में 77 साल की उम्र में कार्डियक अरेस्ट के कारण निधन हो गया। वे फूल और कांटे, सुहाग, हकीकत, जुल्मी, अनाड़ी नंबर 1 और ये दिल आशिकाना जैसी कई लोकप्रिय हिंदी फिल्मों के निर्देशन के लिए जाने जाते थे। कू कू कोहली ने 1991 में रिलीज़ हुई फिल्म फूल और कांटे से अजय को पहला ब्रेक देकर उनके करियर को आकार देने में अहम भूमिका निभाई थी। यह फिल्म अजय की बतौर लीड एक्टर पहली फिल्म थी और सफल रही थी। फिल्म में एक्टर का इंट्रोडक्शन सीन, जिसमें वे दो चलती हुई मोटरसाइकिलों के बीच खड़े होकर स्प्लिट करते हुए दिखाई देते हैं, हिंदी सिनेमा के सबसे यादगार डेब्यू सीन में से एक बन गया। फिल्ममेकर और अजय ने बाद में सुहाग फिल्म में भी साथ काम किया, जिसमें अक्षय कुमार,करिश्मा कपूर और नगमा भी थे। कू कू कोहली की पर्सनल लाइफ भी दिग्गज एक्ट्रेस अरुणा ईरानी से गहराई से जुड़ी हुई थी। दोनों ने 1990 में शादी की थी, और उनका रिश्ता कई सालों तक काफी हद तक निजी रहा क्योंकि कू कू पहले से शादीशुदा थे और उनकी दो बेटियां थीं। बुधवार को मुंबई में कू कू के अंतिम संस्कार के दौरान, अरुणा श्मशान घाट पर काफी दुखी नज़र आईं। सफेद कपड़ों में नज़र आईं दिग्गज एक्ट्रेस भावुक थीं और वेन्यू की ओर जाते समय उन्हें सहारा दिया जा रहा था। फिल्म इंडस्ट्री की कई हस्तियां भी फिल्ममेकर को अंतिम श्रद्धांजलि देने पहुंचीं। फिल्ममेकर रोहित शेट्टी, एक्टर विक्की कौशल,कैटरीना कैफ और रज़ा मुराद अंतिम संस्कार में शामिल होने वालों में शामिल थे। कुकू कोहली की फूल और कांटे के बारे में बात करें तो यह फिल्म नवंबर 1991 में रिलीज हुई थी और इस एक्शन-रोमांस ड्रामा में अजय देवगन,मधु,अमरीश पुरी,अरुणा ईरानी,जगदीप और रजा मुराद ने अभिनय किया था। नदीम-श्रवण द्वारा रचित फिल्म का संगीत भी व्यापक रूप से लोकप्रिय था, जिसमें मैंने प्यार तुम्ही से किया है,तुमसे मिलने को दिल करता है,प्रेमी आशिक आवारा और धीरे-धीरे प्यार को बढ़ाना है जैसे गाने उस युग के यादगार ट्रैक बन गए।

खेल समाचार

वैभव सूर्यवंशी 30 अगस्त को सेमीफाईनल में मैदान पर उतरेंगे

दलीप ट्रॉफी 2026 में क्वार्टर फाइनल मुकाबले खत्म होने के बाद अब सेमीफाइनल किन चार टीमों के बीच में खेला जाएगा वह तय हो गया है...वहीं सभी की नजरें वैभव सूर्यवंशी को लेकर हैं जो ईस्ट जोन का हिस्सा हैं और क्वार्टर फाइनल में वह अपने बल्ले से कमाल दिखाने में कामयाब नहीं हो सके थे...

नई दिल्ली,26 अगस्त 2026। भारतीय घरेलू क्रिकेट के मौजूदा सीजन की शुरुआत दलीप ट्रॉफी के साथ हो गई है जिसमें क्वार्टर फाइनल मुकाबले खत्म होने के बाद किन चार टीमों के बीच में सेमीफाइनल मैच खेले जाएंगे वह भी तय हो गए हैं। 23 अगस्त से शुरू हुए दोनों क्वार्टर फाइनल में पहला मैच ईस्ट जोन और नॉर्थ ईस्ट जोन की टीम के बीच में खेला गया जिसको ईस्ट जोन की टीम एक पारी और 210 रनों से अपने नाम करने में कामयाब रही। दूसरा क्वार्टर फाइनल मैच नॉर्थ जोन और वेस्ट जोन की टीम के बीच में हुआ जिसको नॉर्थ जोन की टीम 52 रनों से अपने नाम करने के साथ सेमीफाइनल के लिए अपनी जगह को पक्का करने में कामयाब हो गई। वहीं अब सभी की नजरें वैभव सूर्यवंशी को लेकर हैं जो ईस्ट जोन टीम की पारी का हिस्सा हैं और अब सेमीफाइनल में उनकी टीम का सामना सेंट्रल जोन की टीम से होगा जो 30 अगस्त से खेला जाएगा।

वैभव से इस बार गेंद से नहीं बल्ले से कमाल की उम्मीद

ईस्ट जोन की तरफ से खेलते हुए क्वार्टर फाइनल मुकाबले में नॉर्थ ईस्ट जोन के खिलाफ वैभव को सिर्फ एक पारी में ही बल्लेबाजी करने का मौका मिला,जिसमें वह 8 रन ही बनाने में कामयाब हो सके। वहीं वैभव ने अपना कमाल

गेंदबाजी में जरूर दिखाया था जिसमें वह 2 विकेट लेने में कामयाब रहे थे। हालांकि अब सभी की नजरें वैभव के बल्ले से प्रदर्शन पर है, जिसमें रेड बॉल क्रिकेट में कैसा कमाल दिखाते हैं। वैभव सूर्यवंशी अब दलीप ट्रॉफी 2026 में 30 अगस्त से शुरू होने वाले सेंट्रल जोन के खिलाफ पहले सेमीफाइनल मुकाबले में खेलने उतरेंगे जिसमें यह मुकाबला भारतीय समयानुसार सुबह 9:30 से बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में ग्राउंड-1 में खेला जाएगा। सेंट्रल जोन के स्क्वाड को लेकर बात की जाए तो उसकी कप्तानी रजत पादीदार संभाल रहे हैं जबकि बड़े खिलाड़ियों में रिंकू सिंह और हर्ष दुबे का नाम शामिल है।

साउथ जोन से भिड़ेगी नॉर्थ जोन की टीम

दलीप ट्रॉफी 2026 का दूसरा सेमीफाइनल मुकाबला भी 30 अगस्त से शुरू होगा जिसमें यह साउथ जोन और नॉर्थ जोन की टीम के बीच में बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के ग्राउंड-2 में खेला जाएगा। इस मैच में साउथ जोन टीम की कप्तानी तिलक वर्मा संभाल रहे हैं जबकि स्क्वाड में बड़े खिलाड़ियों में नारायण जगदीशन और करुण नायर का नाम शामिल है। ऐसे में इस मैच को लेकर भी सभी की नजरें रहने वाली हैं।

एशियन जूनियर चेस में भारत का जलवा मयंक चक्रवर्ती और प्रतीति बोरदोलोई बने चैंपियन

मुंबई,26 अगस्त 2026। भारतीय शतरंज के युवा सितारों मयंक चक्रवर्ती और प्रतीति बोरदोलोई ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एशियन जूनियर शतरंज चैंपियनशिप 2026 में अपने-अपने वर्गों का खिताब जीत लिया है। दोनों खिलाड़ियों की इस उपलब्धि के साथ भारत ने टूर्नामेंट में गोल्डन डबल पूरा किया। असम के रहने वाले ग्रैंडमास्टर मयंक चक्रवर्ती ने ओपन कैटेगरी में खिताब अपने नाम किया, जबकि प्रतीति बोरदोलोई ने गर्ल्स कैटेगरी में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया।

न्यायालय तहसीलदार लटोरी जिला सूरजपुर छत्तीसगढ़

// ईश्तहार //

रा0प्र0क्र0 202606260100011 अ-21/2025 2026

विनय राय प्रति नमिता मंडल

सर्व साधारण ग्रामवासी ग्राम संजयनगर तहसील लटोरी को सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री विनय राय पिता विकास राय निवासी ग्राम संजयनगर तहसील लटोरी जिला सूरजपुर छ0ग0 द्वारा अपने स्वामित्व एवं अधिपत्य की भूमि ग्राम संजयनगर तहसील लटोरी जिला सूरजपुर स्थित भूमि ख0नं0 74/1, 79/1 रकबा 0.32. 0.13 हे0 भूमि स्थित है। जिसमें से उक्त भूमि ख0न0 74/1 में से अर्थात 45 डिसमिल एवं 79/1 में से 25 डिसमिल भूमि को अनावेदक श्रीमती नमिता मंडल पति मदन मंडल ग्राम संजयनगर तहसील लटोरी के पास 9,00,000/- (नौ लाख रुपये मात्र) में विक्रय करने हेतु सौदा तय किया गया है, जिसमें से 8,00,000/- (आठ लाख रुपये) अग्रिम राशि प्रदाय किया गया है। आवेदित भूमि पुर्नवास विभाग से प्राप्त भूमि है। उक्त भूमि को विक्रय करने हेतु अनुमति बावत आवेदन पत्र कलेक्टर महोदय सूरजपुर को प्रस्तुत करने से जांच प्रतिवेदन हेतु इस न्यायालय को प्राप्त हुआ है।

अतः उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति को कोई दावा / आपत्ति हो तो वे स्वयं अथवा अपने अभिभाषक के माध्यम से इस न्यायालय में दिनांक 18-09-2026 को उपस्थित हो कर दावा / आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। इस तिथि के बाद में प्राप्त दावा / आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 21-08-2026 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुहर से जारी किया गया।

तहसीलदार
लटोरी
जिला- सूरजपुर
(छ.ग.)

सील

सिक्योरिटी गार्ड का बेटा,यूपी टी20 में बल्ले से मचा रहा कोहराम

नई दिल्ली,26 अगस्त 2026। जब इरादों में मजबूती, संस्कारों की विरासत और परिवार का आशीर्वाद साथ हो तो अभाव भी सफलता की राह नहीं रोक सकते। अमेठी जिले के ब्लॉक संग्रामपुर के ग्राम खरेथु निवासी स्वर्गीय भारत सिंह (गांधी) जी के नाती और एक कंस्ट्रक्शन साइट पर गार्ड की नौकरी करने वाले हरिकेश सिंह के बेटे हिमांशु सिंह ने यूपी टी20 लीग 2026 में अपनी आतिशी बल्लेबाजी से तहलका मचा दिया है।

भुवनेश्वर कुमार की कप्तानी में किया कमाल

भारतीय क्रिकेट के दिग्गज तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार की कप्तानी वाली लखनऊ फाल्कन्स में चुने जाना ही हिमांशु की काबिलियत का सीधा प्रमाण था। लेकिन मैदान पर उतरकर उन्होंने जिस तरह लगातार दो मैचों में अपनी टीम को जीत दिलाई,उसने पूरे संग्रामपुर और अमेठी क्षेत्र को गर्व से भर दिया है। हिमांशु ने पहले काशी रुद्राक्ष के खिलाफ महज की मैच विनिंग पारी खेली 41 गेंदों में 64 रनों का तांडव मचाकर इकाना स्टेडियम में सबका दिल जीत लिया।

सपना साकार होते देखना सुखद : चेयरमैन डॉ. संजय कपूर

यूपी टी20 लीग के गवर्निंग काउंसिल चेयरमैन डॉ. संजय कपूर ने हिमांशु सिंह की सफलता और लीग के प्रभाव पर कहा, हमने इस लीग की शुरुआत ही इसलिए की थी ताकि ग्रामीण अंचलों के उन युवाओं को मंच मिल सके,जिनके पास संसाधनों और सुविधाओं की कमी रहती है। आज जब हिमांशु सिंह, शक्ति वर्मा, शुभम गौतम और कृष्णा सरोज जैसे युवा खिलाड़ी इकाना के बड़े मंच पर आकर मैच जिताऊ प्रदर्शन कर रहे हैं तो हमारा सपना साकार होता दिखता है। आने वाले समय में उत्तर प्रदेश से कई ऐसे बेहतरीन युवा क्रिकेटर निकलेंगे जो आईपीएल और भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे।

पंकज सिंह और प्रशांत वीर के बाद हिमांशु

राजनीतिक रूप से देश का वीवीआईपी क्षेत्र माने जाने वाले अमेठी का क्रिकेट इतिहास भी काफी समृद्ध रहा है। अमेठी से निकलने वाले पहले अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर पंकज सिंह थे,जिन्होंने डोमेस्टिक क्रिकेट के सबसे सफल तेज गेंदबाज के रूप में अपनी पहचान बनाई और राजस्थान रॉयल्स समेत भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया।

C M Y K

सीएम साय को बहनों ने बांधी राखी...मुख्यमंत्री ने उपहार भेंट कर जताया स्नेह

महिलाओं का सम्मान,सुरक्षा और सशक्तिकरण ही समृद्ध छत्तीसगढ़ की आधारशिला : मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

महिला स्व-सहायता समूहों को आजीविका गतिविधियों के विस्तार के लिए मिला आर्थिक संबल

रायपुर,26 अगस्त 2026। रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट स्नेह, विश्वास और आत्मीयता का पर्व है। जशपुर जिले के फरसाबहार विकासखंड के ग्राम पंडरीपानी में बुधवार को इस पावन पर्व की यही भावना उस समय और जीवंत हो उठी, जब बड़ी संख्या में क्षेत्र की माताओं-बहनों ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की कलाई पर राखी बांधी। मुख्यमंत्री ने भी बहनों को उपहार भेंट कर उनके प्रति अपना स्नेह और सम्मान व्यक्त किया। पूरे कार्यक्रम में भाई-बहन के आत्मीय रिश्ते के साथ बहनों के सम्मान,सुरक्षा और सशक्तिकरण के प्रति सरकार के संकल्प की झलक दिखाई दी। ग्राम पंडरीपानी में आयोजित 'रक्षाबंधन एवं बहनों से संवाद' कार्यक्रम में मुख्यमंत्री साय ने बहनों से आत्मीय संवाद किया और उनकी बातें सुनीं। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का पर्व नहीं है,बल्कि बहनों के सम्मान, सुरक्षा और सुखद भविष्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी को दोहराने का भी अवसर है। छत्तीसगढ़ की हर माता-बहन आत्मनिर्भर बने, उन्हें आगे बढ़ने के अवसर मिलें और परिवार तथा समाज के निर्णयों में उनकी भूमिका और मजबूत हो,इसी उद्देश्य के साथ राज्य सरकार लगातार कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि महिलाओं का सम्मान और सशक्तिकरण ही समृद्ध छत्तीसगढ़ की मजबूत आधारशिला है। जब महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त होती हैं तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है और परिवार की समृद्धि से समाज एवं प्रदेश की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। राज्य सरकार की

पंडरीपानी को विकास कार्यों की सौगात

मुख्यमंत्री साय ने इस अवसर पर ग्राम पंडरीपानी में लगभग 64 लाख के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया। इनमें महतारी सदन का लोकार्पण भी शामिल है। मुख्यमंत्री ने कहा कि महतारी सदन गांव की महिलाओं के लिए सामूहिक प्रयासों, आर्थिक गतिविधियों और आत्मनिर्भरता का केंद्र बनेगा। महतारी सदन में महिलाओं के लिए बैठक कक्ष, प्रशिक्षण की सुविधा, रसोईघर और शौचालय सहित आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इससे महिला स्व-सहायता समूहों और महिला संगठनों को अपनी बैठकें, प्रशिक्षण तथा विभिन्न आजीविका गतिविधियां संचालित करने के लिए सुविधाजनक और सम्मानजनक स्थान उपलब्ध होगा। मुख्यमंत्री साय ने कार्यक्रम में ग्राम पंचायत फरसाबहार और भेलवा में भी महतारी सदन के निर्माण की घोषणा की। इसके साथ ही उन्होंने मुख्य मार्ग से दानी मोड़ा बस्ती तक सड़क निर्माण के लिए 3 करोड़ 23 लाख की स्वीकृति प्रदान किए जाने की जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि गांवों में बेहतर अधोसंरचना के निर्माण के साथ महिलाओं और ग्रामीण परिवारों के जीवन को सुविधाजनक बनाना सरकार की प्राथमिकता है।

योजनाओं के केंद्र में माताओं-बहनों का सम्मान, स्वावलंबन और बेहतर भविष्य है।

महतारी वंदन ने बहनों को दिया आर्थिक आत्मविश्वास : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी महतारी वंदन योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि योजना के माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपए की आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। यह राशि बहनों को अपनी छोटी-बड़ी जरूरतों के लिए आर्थिक संबल देने के साथ उनके आत्मविश्वास को भी मजबूत कर रही है। उन्होंने बताया कि रक्षाबंधन के पावन पर्व को ध्यान में रखते हुए हाल ही में प्रदेश की 67 लाख से अधिक माताओं-बहनों के खातों में महतारी वंदन योजना की 31वीं किस्त के रूप में 631 करोड़ से अधिक की राशि अंतरित की गई है। त्योहार को देखते हुए सितंबर माह की राशि अग्रिम रूप से जारी की गई, ताकि बहनें उत्साह और उल्लास के साथ रक्षाबंधन का पर्व मना सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य केवल आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना नहीं है। महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना, उनके कौशल को अवसरों से जोड़ना और परिवार तथा समाज के विकास में उनकी भूमिका को और मजबूत करना सरकार का व्यापक उद्देश्य है। महिला स्व-सहायता समूहों के माध्यम से प्रदेश की बहनें आज अनेक आजीविका गतिविधियों से जुड़कर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल प्रस्तुत कर रही हैं।

शासन की सेवाएं अब और आसान, समाधान भी तेज : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि सुशासन का वास्तविक उद्देश्य शासन की सुविधाओं को सरलता और पारदर्शिता के साथ लोगों तक पहुंचाना है। इसी दिशा में सेवा सेतु के माध्यम से 36 विभागों की 700 से अधिक सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध कराई गई हैं। इससे नागरिकों को अनेक शासकीय सेवाओं के लिए कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता कम हुई है। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए अटल डिजिटल सेवा केंद्र शुरू किए जा रहे हैं। वहीं, जनसमस्याओं के त्वरित समाधान के लिए मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 प्रारंभ की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि शासन की योजनाओं और सेवाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरलता से पहुंचे और उसकी समस्या का समयबद्ध समाधान हो,इसी सोच के साथ तकनीक का अधिक से अधिक उपयोग किया जा रहा है।

महिला स्व-सहायता समूहों को मिला आर्थिक संबल

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने महिला स्व-सहायता समूहों को उनकी आर्थिक और आजीविका गतिविधियों के विस्तार के लिए सहायता राशि के चेक प्रदान किए। मोंगरा स्व-सहायता समूह,भगोरा,वैष्णवी स्व-सहायता समूह, कंदईबहार और चांद स्व-सहायता समूह, कंदईबहार को 1.50-1.50 लाख तथा प्रतिज्ञा समूह, बड़ा बस्ती को 1 लाख की सहायता प्रदान की गई। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने महिला समूहों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि स्व-सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के साथ महिलाओं की आत्मनिर्भरता का प्रभावी माध्यम बन रहे हैं। आर्थिक सहायता से समूहों को अपने स्वरोजगार और आजीविका संबंधी कार्यों का विस्तार करने में मदद मिलेगी तथा स्थानीय स्तर पर आय के नए अवसर सृजित होंगे।

बिजली उपभोक्ता : 1 सितंबर से शुरू होगी ईकेवाईसी

नाम गलत हुआ तो अटक सकता है सत्यापन

रायपुर,26 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ में बिजली उपभोक्ताओं के लिए 1 सितंबर 2026 से ईकेवाईसी प्रक्रिया शुरू होने जा रही है। इस प्रक्रिया के दायरे में सिर्फ घरेलू कनेक्शन ही नहीं, बल्कि गैर-घरेलू, कृषि, औद्योगिक, सड़क बत्ती और नलजल समेत बिजली कनेक्शन की सभी श्रेणियों के उपभोक्ता शामिल होंगे। ईकेवाईसी के दौरान उपभोक्ता की पहचान और कनेक्शन से जुड़ी जानकारी का आधार के जरिए सत्यापन किया जाएगा।

बिजली कनेक्शन और आधार का नाम होना चाहिए एक जैसा

ईकेवाईसी के सफल सत्यापन के लिए बिजली कंपनी के रिकॉर्ड में दर्ज उपभोक्ता का नाम और आधार कार्ड में दर्ज नाम का मिलान होना जरूरी होगा। नाम की स्पेलिंग में अंतर, उपनाम में बदलाव, पूरा नाम अलग होना या नाम परिवर्तन की स्थिति में आधार प्रमाणीकरण असफल हो सकता है। ऐसे में उपभोक्ताओं को सलाह दी गई है कि ईकेवाईसी शुरू होने से पहले वे अपने बिजली कनेक्शन के रिकॉर्ड में दर्ज नाम की जांच कर लें। किसी गलती की स्थिति में पहले बिजली कंपनी के रिकॉर्ड में सुधार कराना होगा, उसके बाद ही ईकेवाईसी प्रक्रिया पूरी की जा सकेगी। उपभोक्ताओं के लिए राहत की बात यह है कि ईकेवाईसी के लिए हर बार बिजली कार्यालय जाने की जरूरत नहीं होगी। Mor Bijli App के माध्यम से घर बैठे आधार प्रमाणीकरण कराया जा सकेगा। छत्तीसगढ़

स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी का यह ऐप पहले से बिल, भुगतान, शिकायत और अन्य बिजली सेवाओं के लिए इस्तेमाल किया जाता है। ऑनलाइन प्रक्रिया में परेशानी आने पर उपभोक्ता अपने संबंधित वितरण केंद्र या जोन कार्यालय में जाकर भी ईकेवाईसी करा सकेंगे। बिजली कंपनी ने ईकेवाईसी अभियान को आसान बनाने के लिए मीटर रीडरों को भी उपभोक्ताओं की मदद करने के निर्देश दिए हैं। कार्यालयों में अधिकृत कर्मचारी प्रकाश एप के ईकेवाईसी पोर्टल के जरिए आवश्यक सत्यापन प्रक्रिया पूरी करेंगे।

ईकेवाईसी के लिए नहीं देना होगा कोई शुल्क : ईकेवाईसी की प्रक्रिया पूरी तरह निशुल्क रहेगी। बिजली कंपनी इसके लिए उपभोक्ताओं से किसी तरह का शुल्क नहीं लेगी। इसलिए यदि कोई व्यक्ति ईकेवाईसी कराने के नाम पर पैसे की मांग करता है, तो उपभोक्ताओं को सतर्क रहना चाहिए और उसकी शिकायत संबंधित बिजली कार्यालय में करनी चाहिए।

छत्तीसगढ़ में शनिवार को डे शिफ्ट में चलेंगे स्कूल,खेल-कला पर रहेगा विशेष फोकस

रायपुर,26 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ में स्कूल शिक्षा व्यवस्था को लेकर राज्य सरकार जल्द कई अहम बदलाव करने की तैयारी में है। शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव ने बताया कि शनिवार को मॉर्निंग शिफ्ट में संचालित होने वाले स्कूलों को डे शिफ्ट में चलाने की योजना बनाई जा रही है। शनिवार का दिन केवल नियमित पढ़ाई तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल, सांस्कृतिक और अन्य रचनात्मक गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जाएगा।

शनिवार को खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों पर जोर

शिक्षा मंत्री के अनुसार शनिवार को स्कूलों में विभिन्न खेल और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। इन गतिविधियों में विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। खास बात यह होगी कि स्थानीय और पारंपरिक खेलों को भी प्राथमिकता दी जाएगी। सरकार का उद्देश्य बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ शारीरिक,मानसिक और रचनात्मक रूप से मजबूत बनाना है।

स्थानीय खेलों से बच्चों को जोड़ने की तैयारी

स्कूलों में आयोजित होने वाली खेल गतिविधियों में स्थानीय खेलों को शामिल करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इससे विद्यार्थियों को अपने क्षेत्र की खेल परंपराओं से परिचित कराने के साथ उनकी रुचि विकसित करने में मदद मिलेगी। स्कूल स्तर पर प्रतियोगिताओं के जरिए बच्चों में टीम भावना, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता को बढ़ावा देने की कोशिश की जाएगी।

छात्राओं के लिए कराटे प्रशिक्षण होगा जरूरी

बालिकाओं की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को ध्यान में रखते हुए स्कूलों में कराटे प्रशिक्षण की व्यवस्था करने की तैयारी है। शिक्षा मंत्री ने बताया कि छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाए जाएंगे। इसके लिए प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर तैयार किए जाएंगे, जो आगे स्कूलों में विद्यार्थियों को कराटे की ट्रेनिंग देंगे।

एनसीसी के सहयोग से तैयार होंगे मास्टर ट्रेनर

कराटे प्रशिक्षण को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए शिक्षा विभाग ने एनसीसी से जुड़े अधिकारियों के साथ भी चर्चा की है। विभाग का लक्ष्य ऐसे प्रशिक्षक तैयार करना है,जो अलग-अलग स्कूलों में जाकर छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दे सकें। इससे बालिकाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने और उन्हें किसी भी आपात स्थिति का सामना करने के लिए तैयार करने में मदद मिलेगी।

स्काउट-गाइड और एनसीसी गतिविधियों को मिलेगा बढ़ावा

सरकार स्कूलों में स्काउट-गाइड और एनसीसी जैसी गतिविधियों को भी विस्तार देने की तैयारी कर रही है। विद्यार्थियों को अनुशासन और जिम्मेदारी से जोड़ने के लिए मार्चफास्ट जैसी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। इसके अलावा राष्ट्रगान,राष्ट्रगीत और राष्ट्रीय पर्वों के कार्यक्रमों में स्थानीय बच्चों की भागीदारी बढ़ाई जाएगी। विद्यार्थियों को बैंड और संगीत गतिविधियों से जोड़ने की योजना भी है।

बीजेपी की कार्रवाई : वरिष्ठ भाजपा विधायक के प्रतिनिधि को पार्टी ने 6 साल के लिए किया निष्कासित

रायपुर,26 अगस्त 2026। भारतीय जनता पार्टी ने मनेन्द्रगढ़ भरतपुर चिरमिरी क्षेत्र के स्थानीय नेता और जिला संगठन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा चुके दुर्गाशंकर मिश्रा के खिलाफ बड़ी संगठनात्मक कार्रवाई की है। पार्टी ने उन्हें भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से छह वर्ष के लिए निष्कासित कर दिया है। भाजपा छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंहदेव के निर्देश पर प्रदेश महामंत्री नवीन मार्कंडेय द्वारा यह आदेश जारी किया गया। बता दें कि दुर्गाशंकर मिश्रा भरतपुर सोनहत विधानसभा क्षेत्र की वरिष्ठ भाजपा विधायक रेणुका सिंह के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे थे। रेणुका सिंह पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री और रमन सरकार में भी मंत्री रह चुकी हैं। ऐसे में उनके समर्थक पर की गई कार्रवाई पार्टी में चर्चा का विषय है।

ईद मिलादुन्नबी जुलूस के दौरान चाकूबाजी हिस्ट्रीशीटर ने 3 युवकों को बनाया निशाना

रायपुर,26 अगस्त 2026। रायपुर में ईद मिलादुन्नबी जुलूस के दौरान हंगामा हो गया। देखते ही देखते हिस्ट्रीशीटर बदमाश ने 3 युवकों को चाकू मार दिया। जिससे तीनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। मिली जानकारी के अनुसार,घटना आजाद चौक थाना क्षेत्र के तात्यापारा इलाके की है। बताया जा रहा है कि जूलुस के दौरान हंगामा हो गया। इतने में ही हिस्ट्रीशीटर बदमाश ने तीन युवकों को चाकू मारकर घायल कर दिया। जिसके बाद पूरे जूलुस में माहौल तनावपूर्ण हो गया। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने कुछ युवकों को हिरासत में ले लिया है और सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में पेपर लीक का तीसरा मामला

फंडामेंटल्स ऑफ जेनेटिक्स का पेपर लगभग पांच घंटे पहले व्हाट्सएप पर वायरल,कुलपति बोले-जानकारी नहीं

रायपुर,26 अगस्त 2026। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में पेपर लीक का एक और मामला सामने आया है। बीएससी फर्स्ट ईयर के फंडामेंटल्स ऑफ जेनेटिक्स का पेपर 19 अगस्त को सुबह 10 बजे होना था। लेकिन परीक्षा से करीब 5 से 6 घंटे पहले ही सुबह 4 से 5 बजे के बीच पेपर की पीडीएफ स्टूडेंट्स के बीच वायरल हो गई। वायरल हुई पीडीएफ और एग्जाम में पूछे गए सवाल बिल्कुल एक जैसे थे। पीडीएफ में पेपर के तीनों पार्ट के सभी सवाल मौजूद थे। इतना ही नहीं, 6 नंबर वाले लॉन्ग आंसर क्वेश्चन भी पहले से पीडीएफ में मौजूद थे और उनके आंसर भी दिए गए थे। 19 अगस्त की सुबह जेनेटिक्स का पेपर स्टूडेंट्स के बीच पहुंच गया। वायरल पीडीएफ में पार्ट-ए, पार्ट-बी और पार्ट-सी के सवाल मौजूद थे। पार्ट-ए में लिंकज, सेल साइकिल, ट्रांसक्रिप्शन, मल्टीपल एलील्स, डबल हैप्लायड और प्लियोट्रापी से जुड़े सवाल थे। पार्ट-बी में

यूकैरियोटिक क्रोमोसोम, एपिस्टेसिस, जीन इंटरैक्शन, मेंडल के लॉज, म्यूटेशन, क्वांटिटेटिव और क्वालिटेटिव ट्रेट्स और जेनेटिक कोड से जुड़े सवाल पूछे गए।

6 नंबर के सवाल भी पीडीएफ में पहले से थे : मामले का सबसे गंभीर हिस्सा पार्ट-सी है। इसमें 6 नंबर के लॉन्ग क्वेश्चन पूछे गए थे। वायरल पीडीएफ में ये सवाल पहले से मौजूद थे और इनके डिटेल्ड आंसर भी दिए गए थे। इनमें मीयोसिस-1, स्ट्रक्चरल और न्यूमेरिकल क्रोमोसोमल एबरेशन, क्रोमोसोमल थ्योरी ऑफ इनहेरिटेंस, साइटोप्लाज्मिक इनहेरिटेंस, सेक्स लिमिटेड और सेक्स इन्फ्लुएंस्ड ट्रेट्स, हैप्लायड-डिप्लायड, क्रॉसिंग ओवर-ट्रांसलोकेशन और डीएनए स्ट्रक्चर से जुड़े सवाल शामिल थे।

पहले कीट विज्ञान, फिर प्लांट पैथोलॉजी का पेपर लीक : इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में पेपर लीक का यह पहला मामला नहीं है। इससे पहले एंटोमोलॉजी यानी कीट विज्ञान का पेपर परीक्षा से करीब 2 घंटे पहले वायरल हुआ था। इसके बाद यूनिवर्सिटी ने परीक्षा कैंसिल कर दी थी। पुलिस जांच में एक प्रोफेसर समेत 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था। इसके बाद प्लांट पैथोलॉजी का पेपर लीक होने का मामला भी सामने आया। जांच में पता चला कि गिरफ्तार आरोपियों ने ही यह पेपर भी लीक किया था। पुलिस की जांच में यह बात सामने आई कि दोनों पेपर छात्रों तक पैसे लेकर पहुंचाए गए थे। अब इन दोनों परीक्षाओं को सितंबर के पहले सप्ताह में दोबारा कराया जाएगा।

कुलपति बोले...अभी एक ही पेपर लीक की सूचना मिली थी : आईजीकेवी के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल ने कहा कि उन्हें अभी तक सिर्फ एक पेपर लीक होने की जानकारी मिली थी। इस मामले की शिकायत पुलिस से की गई थी। पुलिस जांच में दो पेपर लीक होने की बात सामने आई।

इसके बाद दोनों परीक्षाएं कैंसिल कर दोबारा कराने के निर्देश दिए गए। कुलपति ने कहा कि अगर जेनेटिक्स के पेपर में भी लीक की जानकारी सामने आती है तो इस मामले में भी कार्रवाई की जाएगी।

भूपेश बघेल का बड़ा बयान...

कहा...आदिवासी विरोधी है भाजपा सरकार,छीन लिए सारे अधिकार

रायपुर,26 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ में आदिवासियों के हितों को लेकर सियासी बयानबाजी तेज हो गई है। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि यह आदिवासी विरोधी सरकार है। कांग्रेस सरकार के पिछले कार्यकाल में आदिवासियों को अधिकार संपन्न बनाने के साथ उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कई काम किए गए थे। उन्होंने आरोप लगाया कि आज आदिवासियों के सारे अधिकार छीन लिए गए हैं। जिन क्षेत्रों में उनकी सरकार ने काम किया था,वहां अब कोई काम नहीं हो रहा है। स्कूली छात्रों के प्रदर्शन को कांग्रेस जनित प्रदर्शन बताने वाले शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव के बयान पर भूपेश बघेल ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि बच्चे सबके हैं, स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे किसी पार्टी के नहीं हैं। वह देश-प्रदेश का भविष्य हैं। बच्चों को किसी राजनीतिक दल से जोड़ना ओछी मानसिकता है।बघेल ने शिक्षा व्यवस्था को लेकर सरकार और शिक्षा मंत्री पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि मंत्री अपना काम पूरा नहीं कर पा रहे हैं। स्कूलों में पानी और शिक्षकों जैसी बुनियादी व्यवस्थाएं तक सुनिश्चित नहीं हो पा रही हैं। उन्होंने कहा कि अपना कर्तव्य निभाने में असफल पा रहे हैं, और आरोप बच्चों और कांग्रेस पर लगा रहे है।

टीईटी को लेकर शिक्षकों के प्रदर्शन पर भूपेश का बयान

प्रदेश में टीईटी अनिवार्यता को लेकर शिक्षकों के प्रदर्शन के बीच पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने सरकार से रास्ता निकालने की मांग की है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की आधी उम्र बीत चुकी है और अब उन्हें परीक्षा दिलाने के लिए कहा जा रहा है। सांसद भोजराज नाग के बयान पर दीपक बैज ने कसा तंज,कहा... तो नींबू काटकर महंगाई रोक दें! पेट्रोल-शक्कर की कीमतें कम करवा दें! बिजली बिल कम करवा दें!

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साईं ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)